लखनऊ

मंगलवार, 15 सितंबर, 203

वर्ष : 12 । अंक: 22

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

UPHIN/2014/57034

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

अगर आप सच बोलेंगे, तो आपको कुछ याद रखने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।

TODAY WEATHER

DAY	NIGHT
32°	28°
Hi	Low

संक्षेप

एलएसी पर कम हुई चीन की सैन्य मौजूदगी, उत्तरी सीमाओं पर करीब 10 ब्रिगेड तैनात

नई दिल्ली/बीजिंग। भारत-चीन सीमा को लेकर बड़ी खबर सामने आई है। रक्षा मंत्रालय की 2025-26 की सालाना रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2025 में उत्तरी सीमाओं पर चीनी पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की तैनाती में बड़ी कमी दर्ज की गई। रिपोर्ट के अनुसार, चीन ने वास्तविक नियंत्रण रेखा के सामने अपनी सैन्य मौजूदगी घटाई है और अब उत्तरी सीमाओं तथा पारंपरिक प्रशिक्षण क्षेत्रों में करीब 10 कंबाइंड आर्म्स ब्रिगेड के बराबर बल तैनात है। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि भारत की ओर से सभी एलएसी सेक्टर में सेना की तैनाती मजबूत बनी हुई है। भारतीय सेना किसी भी उभरती चुनौती से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार और उचित स्थिति में है। रिपोर्ट के मुताबिक, भारत और चीन के बीच सकारात्मक राजनीतिक, कूटनीतिक और सैन्य स्तर की बातचीत से उत्तरी सीमाओं पर स्थिति में अपेक्षाकृत स्थिरता आई है। रिपोर्ट में यह भी बताया गया है कि दोनों देशों के बीच सैन्य स्तर की बातचीत दोबारा शुरू हो चुकी है। इसमें अक्टूबर 2025 में पूर्वी लद्दाख में हुई 23वीं कोर कमांडर स्तर की बैठक भी शामिल है। सैन्य वार्ताओं के जरिए सीमा से जुड़े मुद्दों को सुलझाने और तनाव कम करने के प्रयास लगातार जारी हैं। इसके अलावा चीनी क्कर्र के साथ बॉर्डर पर्सनल मीटिंग भी सभी सेक्टर में जारी हैं। रक्षा मंत्रालय के अनुसार, इन बैठकों का माहौल सौहार्दपूर्ण रहा है और इनके जरिए दोनों पक्षों से जुड़े मुद्दों को उठाने और उनके समाधान की कोशिश की जा रही है।

गणेश स्वरूप में सजे बाबा महाकाल; भांग, रुद्राक्ष की माला और फूलों से भव्य शृंगार

उज्जैन। श्री महाकालेश्वर मंदिर में भाद्रपद शुक्ल पक्ष की तृतीया और चतुर्थी तिथि पर, सोमवार को बाबा महाकाल की भस्म आरती की गई। इस अलौकिक दृश्य के साक्षी बनने के लिए मंदिर परिसर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे। सोमवार तड़के भगवान वीरभद्र की आज्ञा लेने के बाद ढोल-नगाड़ों के साथ बाबा महाकाल के कपाट खोले गए। दिव्य शृंगार और भस्म आरती के बाद जैसे ही श्रद्धालुओं को बाबा के दर्शन हुए, पूरा मंदिर परिसर 'जय श्री महाकाल' के उद्घोष से गूंज उठा। मंदिर परिसर घंटियों, शंखध्वनि और मंत्रोच्चार से गुंजायमान हो उठा। महाकाल मंदिर के पट खुलने के साथ ही मंत्रोच्चार के बीच भगवान महाकाल का जलाभिषेक कर दूध, दही, घी, शहद, और फलों के रस से बने पंचामृत से अभिषेक किया गया। बाबा महाकाल की पूजा के दौरान प्रथम घंटाल बजाकर हरिओम जल अर्पित किया गया। कपूर आरती के बाद बाबा ने मुकुट धारण किया। इसके बाद झांझ-मंजीरे, ढोल-नगाड़े, और शंखनाद के साथ भस्म आरती की गई। बाबा महाकाल का भांग से गणेश स्वरूप में शृंगार किया गया। बाबा को रुद्राक्ष और फूलों की माला अर्पित की गई। महाकाल मंदिर के पुजारी ने महाआरती संपन्न कराई। बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल की भस्म आरती के दर्शन किए। अपने आराध्य देव के दर्शन पाने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु बीती रात से ही कतारबद्ध थे। भस्म आरती के दौरान पुरुषों के लिए पारंपरिक धोती-सोला और महिलाओं के लिए साड़ी पहनना अनिवार्य होता है। परंपरा के अनुसार, महानिर्वाणी अखाड़े की ओर से बाबा महाकाल को भस्म आरती अर्पित की जाती है। मान्यता है कि भस्म अर्पित किए जाने के बाद बाबा महाकाल निराकार से साकार रूप में दर्शन देते हैं।

'हिंदी किसी भाषा की प्रतिद्वंद्वी नहीं': अमित शाह बोले- मातृभाषा न छोड़ें

नई दिल्ली, एजेंसी। हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने देशवासियों को शुभकामनाएं दीं। उन्होंने भारत की भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि का उल्लेख करते हुए कहा कि देश में बोली जाने वाली अलग-अलग भाषाएं किसी कमजोरी का संकेत नहीं, बल्कि भारत की सबसे बड़ी ताकत हैं।

अमित शाह ने कहा कि हर भाषा अपने साथ इतिहास, लोक परंपराएं और दुनिया को देखने का अलग नजरिया लेकर चलती है। ये सभी मिलकर नई पीढ़ी के मूल्यों को आकार देती हैं। उनके मुताबिक, भारत में मौजूद भाषाई विविधता ही देश की 'विविधता में एकता' की भावना को और मजबूत करती है।

गृह मंत्री ने कहा कि हिंदी का उद्देश्य दूसरी भारतीय भाषाओं से प्रतिस्पर्धा करना नहीं है। इसके बजाय हिंदी देश की अलग-अलग भाषाओं के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने वाली महत्वपूर्ण कड़ी के तौर पर काम करती है। उन्होंने कहा कि भारत का इतिहास इस बात का प्रमाण है कि अलग-अलग मातृभाषाओं से जुड़े लोगों ने हिंदी को व्यापक संवाद की भाषा बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

'दुनिया की भाषाएं सीखें, लेकिन अपनी मातृभाषा को न छोड़ें'

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने युवाओं से दुनिया की ज्यादा से ज्यादा भाषाएं सीखने, लेकिन अपनी मातृभाषा को न छोड़ने की अपील की। उन्होंने अभिभावकों से बच्चों से अपनी मातृभाषा में बात करने को कहा। शाह ने कहा कि अपनी भाषा बोलने में किसी को हीन भावना नहीं रखनी चाहिए, क्योंकि भाषा हमें मां, मिट्टी, इतिहास और संस्कृति से जोड़ती है। उन्होंने बताया कि 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के 'औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति' के आह्वान में भाषा की अहम भूमिका है। उन्होंने राजपथ का नाम कर्तव्य पथ करने और नए कानूनों को आत्मसम्मान से जोड़ा।

'मेरी मातृभाषा गुजराती, लेकिन हिंदी जोड़ती है आम लोगों से'

अमित शाह ने अपनी मातृभाषा का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी मातृभाषा गुजराती है। इसके बावजूद जब वह देश के किसी भी हिस्से में जाते हैं, तो आम लोगों से सीधे जुड़ने में हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने कहा कि आजादी के बाद भारतीय भाषाओं ने राष्ट्र निर्माण, प्रशासन और विकास को आम लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके मुताबिक, हिंदी समेत सभी भारतीय भाषाओं ने जनजागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के आदर्शों को आगे बढ़ाने में योगदान दिया है। गृह मंत्री ने कहा कि भारतीय भाषाओं को सम्मान देना केवल भाषा का विषय नहीं है, बल्कि यह देश की संस्कृति, इतिहास और आत्मगौरव से जुड़ा हुआ मुद्दा है।

दयानंद सरस्वती और सत्यार्थ प्रकाश का दिया उदाहरण

अमित शाह ने स्वामी दयानंद सरस्वती का उदाहरण देते हुए कहा कि उनकी मातृभाषा गुजराती थी, लेकिन उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' हिंदी में लिखी। उनके मुताबिक, यह इस बात का उदाहरण है कि हिंदी का विकास केवल हिंदी मातृभाषा वाले लोगों के योगदान से नहीं हुआ।

'लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है जनविश्वास, संस्थाओं को पारदर्शिता के साथ काम करना होगा'

आर्यावर्त क्रांति

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि संवैधानिक संस्थाओं में सामान्य नागरिक का विश्वास ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत है। जो संस्था आमजन के विश्वास पर खरी उतरेगी, लोकतंत्र में उसे आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता और न ही कोई उसके महत्व को कम करके आंक सकता है। सुशासन जनविश्वास पर निर्भर करता है। यदि जनता का विश्वास नहीं होगा तो सुशासन के लक्ष्य को प्राप्त करना संभव नहीं है। इसके लिए जरूरी है कि समाज के अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति भी संवैधानिक संस्थाओं पर विश्वास करते हुए गौरव और गरिमा की अनुभूति कर सके।मुख्यमंत्री सोमवार को लोक आयुक्त संगठन के 50वें स्थापना दिवस समारोह को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने लोक आयुक्त प्रशासन की स्मारिका और सूचना पुस्तिका का विमोचन किया। उन्होंने संगठन की 50 वर्षों की उपलब्धियों पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया और लघु फिल्म भी देखी।मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी संस्था का गठन मात्र समस्या का समाधान नहीं है। जनविश्वास पर खरा उतरना ही लोकतंत्र की सबसे बड़ी कसौटी है। संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए संसदीय लोकतंत्र की व्यवस्था दी है, जिसमें जनप्रतिनिधियों की सबसे बड़ी शक्ति जनता का विश्वास है। यदि कोई जनप्रतिनिधि जनता का विश्वास खो देता है तो उसे सत्ता से बाहर होना पड़ता है। हर पांच वर्ष में जनप्रतिनिधियों को जनता के बीच जाना पड़ता है और यदि वे जनभावनाओं का सम्मान नहीं करते तो जनता को उन्हें बदलकर दूसरे प्रतिनिधि को अवसर देने का पूरा अधिकार है।उन्होंने कहा कि संविधान निर्माताओं ने न्याय, सत्य और समता को भारत की मौलिक आवश्यकता माना है। प्रत्येक व्यक्ति को न्याय पाने का अधिकार है और न्याय का आधार सत्य की कसौटी है। किसी भी व्यक्ति को बिना भेदभाव समान दृष्टि से देखा जाना चाहिए। शिकायतों का समाधान उनके गुण-दोष के आधार पर हो और शिकायतकर्ता को समाधान से संतुष्टि मिले, इस दिशा में संस्थाओं को लगातार काम करना चाहिए।मुख्यमंत्री ने शिकायत प्रणालियों के दुरुपयोग पर भी चिंता जताई। उन्होंने कहा कि जनसुनवाई, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन और जनता दर्शन के माध्यम से जनसमस्याओं का समयबद्ध समाधान कराया जा रहा है, लेकिन कुछ लोग अनावश्यक और झूठी शिकायतें भी करते हैं। कई बार लोग स्वीकार करते हैं कि शिकायत उनकी व्यक्तिगत समस्या नहीं है, लेकिन किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था के खिलाफ शिकायत करनी है। प्रमाण मांगे जाने पर भी आनाकानी की जाती है। उन्होंने एक घटना का उल्लेख करते हुए कहा कि एक व्यक्ति ने एक विद्यालय के खिलाफ शिकायत की। जांच में शिकायत झूठी पाए जाने के बाद भी उसने पूरे जिले के विद्यालयों की जांच कराने की मांग कर दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसी झूठी शिकायतों को खारिज किया जाना चाहिए, क्योंकि इससे व्यवस्था का समय खराब होता है और न्याय की वास्तविक अपेक्षा रखने वाले ईमानदार शिकायतकर्ता का भी नुकसान होता है। शिकायत प्रणाली का दुरुपयोग करने वाले तत्वों से दूरी बनाना जरूरी है। संस्थाओं को मिले अधिकारों का दुरुपयोग न हो, इसके लिए शिकायतों की मेरिट तय की जाए और अनावश्यक शिकायत करने वालों पर भी प्रभावी अंकुश लगाया जाए।मुख्यमंत्री ने कहा कि लोक आयुक्त संगठन ने तकनीक का बेहतर उपयोग किया है और शासन में भी तकनीक के माध्यम से शिकायतों तथा भ्रष्टाचार की संभावनाओं को कम किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि वर्ष 2017 में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में खाद्यान्न वितरण से संबंधित शिकायतें बड़ी संख्या में आती थीं।

3400 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति वाला मंत्री बना भिखारी, सड़क पर खाया खाना

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के सबसे अमीर विधायकों में शामिल पराग शाह का एक अलग तरह का सामाजिक और धार्मिक प्रयोग चर्चा में है। 3400 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति वाले घाटकोपर पूर्व के विधायक पराग शाह ने एक दिन के लिए अपना रूप बदलकर भिखारी का जीवन जीने का अनुभव लिया। उन्होंने सड़क पर लोगों से भिक्षा मांगी और उसी से भोजन करने का अनुभव भी किया।

जानकारी के अनुसार, जैन धर्म के चातुर्मास के दौरान पराग शाह के गुरु नम्रमुनि ने उन्हें एक दिन भिखारी के जीवन और उसकी परिस्थितियों को करीब से समझने का अनुभव लेने की सलाह दी थी। इसके बाद शाह ने अपने नियमित सुरक्षा घेरे और अन्य सुविधाओं से अलग रहकर मेकअप के जरिए भिखारी का रूप धारण किया। भिखारी के वेश में पराग शाह ने विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर जाकर लोगों से संपर्क किया और उनसे भिक्षा मांगी। इस दौरान ज्यादातर लोग उन्हें पहचान नहीं सके। उन्होंने भिक्षा में मिले पैसे या भोजन के माध्यम से एक दिन सामान्य भिखारी की तरह जीवन बिताने का प्रयास किया। इस अनुभव के बाद शाह कुछ स्थानों पर दोबारा पहुंचे और लोगों को अपनी वास्तविक पहचान बताई। उन्होंने उनसे बातचीत कर अपने अनुभव साझा किए। उनके इस प्रयोग का उद्देश्य समाज के उस वर्ग के जीवन और कठिनाइयों को करीब से समझना बताया जा रहा है, जो रोजाना दूसरों से मदद या भिक्षा पर निर्भर रहता है। पराग शाह घाटकोपर पूर्व विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं और अपनी घोषित संपत्ति के कारण महाराष्ट्र के सबसे अमीर विधायकों में गिने जाते हैं। ऐसे में उनका एक दिन के लिए भिखारी का जीवन जीना चर्चा का विषय बन गया है। इसे जहां एक व्यक्तिगत और धार्मिक अनुभव के तौर पर देखा जा रहा है, वहीं इस पहल ने यह सवाल भी खड़ा किया है कि क्या कुछ घंटों या एक दिन के अनुभव से गरीबी और उससे जुड़ी वास्तविक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को पूरी तरह समझा जा सकता है।

3400 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति वाला मंत्री बना भिखारी

मुंबई, एजेंसी। महाराष्ट्र के सबसे अमीर विधायकों में शामिल पराग शाह का एक अलग तरह का सामाजिक और धार्मिक प्रयोग चर्चा में है। 3400 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्ति वाले घाटकोपर पूर्व के विधायक पराग शाह ने एक दिन के लिए अपना रूप बदलकर भिखारी का जीवन जीने का अनुभव लिया। उन्होंने सड़क पर लोगों से भिक्षा मांगी और उसी से भोजन करने का अनुभव भी किया।

जानकारी के अनुसार, जैन धर्म के चातुर्मास के दौरान पराग शाह के गुरु नम्रमुनि ने उन्हें एक दिन भिखारी के जीवन और उसकी परिस्थितियों को करीब से समझने का अनुभव लेने की सलाह दी थी। इसके बाद शाह ने अपने नियमित सुरक्षा घेरे और अन्य सुविधाओं से अलग रहकर मेकअप के जरिए भिखारी का रूप धारण किया। भिखारी के वेश में पराग शाह ने विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर जाकर लोगों से संपर्क किया और उनसे भिक्षा मांगी। इस दौरान ज्यादातर लोग उन्हें पहचान नहीं सके। उन्होंने भिक्षा में मिले पैसे या भोजन के माध्यम से एक दिन सामान्य भिखारी की तरह जीवन बिताने का प्रयास किया। इस अनुभव के बाद शाह कुछ स्थानों पर दोबारा पहुंचे और लोगों को अपनी वास्तविक पहचान बताई। उन्होंने उनसे बातचीत कर अपने अनुभव साझा किए। उनके इस प्रयोग का उद्देश्य समाज के उस वर्ग के जीवन और कठिनाइयों को करीब से समझना बताया जा रहा है, जो रोजाना दूसरों से मदद या भिक्षा पर निर्भर रहता है। पराग शाह घाटकोपर पूर्व विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं और अपनी घोषित संपत्ति के कारण महाराष्ट्र के सबसे अमीर विधायकों में गिने जाते हैं। ऐसे में उनका एक दिन के लिए भिखारी का जीवन जीना चर्चा का विषय बन गया है। इसे जहां एक व्यक्तिगत और धार्मिक अनुभव के तौर पर देखा जा रहा है, वहीं इस पहल ने यह सवाल भी खड़ा किया है कि क्या कुछ घंटों या एक दिन के अनुभव से गरीबी और उससे जुड़ी वास्तविक सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों को पूरी तरह समझा जा सकता है।

सरकार के पीछे पड़े कॉकरोच, अभिजीत दीपके का बड़ा ऐलान- फिर शुरू होगा आंदोलन

मुंबई, एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके ने महाराष्ट्र लोक सेवा आयोग (एमपीएससी) की ऑनलाइन परीक्षाओं में कथित पेपर लीक और अन्य अनियमितताओं के खिलाफ आंदोलन में शामिल होने का ऐलान किया है। पार्टी ने एमपीएससी के अध्यक्ष और सचिव के इस्तीफे की मांग को लेकर चल रहे अभ्यर्थियों के प्रदर्शन को समर्थन देने की घोषणा की है। सीजेपी ने कहा है कि मांग पूरी नहीं होने पर राज्यव्यापी आंदोलन को आगे बढ़ाया जाएगा। सीजेपी की ओर से रविवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक, अभिजीत दीपके और पार्टी के अन्य नेता एमपीएससी अभ्यर्थियों के प्रदर्शन में शामिल होंगे। इससे पहले एमपीएससी की तैयारी कर रहे कुछ अभ्यर्थियों ने छत्रपति संभाजीनगर के वालुज स्थित दीपके के आवास पर उनसे मुलाकात की थी।

मुरादाबाद में हैंडीक्राफ्ट फैक्ट्री में भीषण आग, धुएं का गुबार उठते ही बाहर भागे सैकड़ों मजदूर

आर्यावर्त क्रांति

मुरादाबाद। कटघर क्षेत्र के रामपुर दोराहा स्थित आरएच इंटरनेशनल फैक्टरी में सोमवार सुबह अचानक भीषण आग लग गई। कुछ ही देर में आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और फैक्टरी के चारों तरफ लपटें उठने लगीं। धुएं का गुबार करीब दो किलोमीटर दूर से दिखाई दिया। सूचना पर दमकल विभाग की टीमें मौके पर पहुंचीं और आग बुझाने में जुट गईं।

नियातक मोहम्मद तसलीम की इस फैक्टरी में हैंडीक्राफ्ट के आइटम बनाए जाते हैं। सुबह करीब 11 बजे अचानक फैक्टरी में आग लगी और देखते ही देखते तेजी से फैल गई। हैंडीक्राफ्ट के आइटम होने के कारण आग लगातार तेज होती गई। आग की लपटें उठने के साथ ही आसपास के इलाके में धुएं का गुबार फैल गया।

सीएफओ राजीव पांडे ने बताया कि फिलहाल 10 दमकल गाड़ियों से आग बुझाने का प्रयास किया जा रहा है। आग की चपेट में आई यूनिट के साथ दूसरी यूनिट को भी सुरक्षित रखने के प्रयास किए जा रहे हैं, ताकि आग वहां तक न पहुंच सके। आग की विकरालता को देखते हुए अन्य जगहों से भी दमकल की गाड़ियां बुलाई गई हैं। दमकल कर्मी लगातार आग पर काबू पाने में जुटे हैं। फिलहाल आग पूरी तरह बुझ नहीं पाई है। आग से फैक्टरी में रखा कितना सामान जला और कितने का नुकसान हुआ, इसका आकलन आग बुझने के बाद ही हो सकेगा।

ओडिशा के गांव से सीखें : बबेइजोड़ा बना मिसाल, सफाई के लिए बड़े बजट नहीं दृढ़ इच्छाशक्ति जरूरी

मयूरभंज, एजेंसी। ओडिशा के मयूरभंज जिले का छोटा सा आदिवासी गांव बबेइजोड़ा अपनी अनूठी स्वच्छता व्यवस्था के कारण देशभर में चर्चा का विषय बना हुआ है। पिछले करीब 15 वर्षों से यह गांव कचरा और प्लास्टिक मुक्त बना हुआ है। खूबसूरत और हराभरा बबेइजोड़ा बिशोई ब्लॉक में राष्ट्रीय राजमार्ग-49 से महज दो किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और बारिपदा से करीब 70 किलोमीटर दूर है। गांव की स्वच्छता व्यवस्था यह साबित करती है कि यह कोई अस्थायी अभियान नहीं, बल्कि यहां के लोगों की जीवनशैली का हिस्सा बन चुकी है। ग्रामीणों ने दिखाया है कि स्वच्छता बनाए रखने के लिए बड़े बजट से ज्यादा जरूरी सामूहिक जिम्मेदारी, ईमानदार सोच और दृढ़ इच्छाशक्ति है। गांव की सड़कें और गलियां साफ-सुथरी रहती हैं और कहीं भी कूड़ा बिखरा नजर नहीं आता। हर निवासी अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखने में सक्रिय भूमिका निभाता है।

स्थानीय शिक्षक ने शुरू किया था स्वच्छता अभियान

बबेइजोड़ा के स्वच्छता आंदोलन की शुरुआत करीब 15 साल पहले स्थानीय आदिवासी शिक्षक मधुसूदन मरांडी ने की थी। धीरे-धीरे ग्रामीण भी इस पहल से जुड़ते गए और स्वच्छता को सामूहिक जिम्मेदारी बना लिया। आज बबेइजोड़ा यह संदेश दे रहा है कि किसी गांव को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए सिर्फ संसाधन नहीं, बल्कि लोगों की भागीदारी और मजबूत इच्छाशक्ति भी जरूरी है।

महिलाएं दिन में तीन बार करती हैं सफाई

बबेइजोड़ा में गंदगी फैलाने, सार्वजनिक स्थानों पर थूकने, धूम्रपान करने और प्लास्टिक के इस्तेमाल पर प्रतिबंध है। गांव की महिलाएं दिन में तीन बार सड़कों और गलियों की सफाई करती हैं। कचरा जमा करने के लिए हर 30 मीटर पर बांस से बने डस्टबिन लगाए गए हैं। वहीं, युवा स्वयंसेवक रोजाना कचरा एकत्र करते हैं और जैविक कचरे से कंपोस्ट तैयार करते हैं।

CCTV से निगरानी, गंदगी फैलाने पर जुर्माना

स्वच्छता व्यवस्था को प्रभावी बनाए रखने के लिए गांव में CCTV कैमरे भी लगाए गए हैं। इनके जरिए स्थानीय लोगों के साथ-साथ पर्यटकों पर भी नजर रखी जाती है। नियमों का उल्लंघन कर गंदगी फैलाने वालों पर जुर्माना लगाया जाता है।

बबेइजोड़ा की स्वच्छता और खूबसूरती पर्यटकों को भी आकर्षित करती है। ओडिशा के विभिन्न हिस्सों के अलावा पश्चिम बंगाल, झारखंड और देश के अन्य राज्यों से घरेलू पर्यटक यहां पहुंचते हैं।

मिट्टी के घरों पर पारंपरिक चित्रकारी

गांव की एक और खासियत यहां के मिट्टी के घर हैं। इन घरों की दीवारों पर गांव की महिलाओं ने मिट्टी, फूल, पत्थरों और पेड़ों की छाल से तैयार प्राकृतिक रंगों के जरिए खूबसूरत पारंपरिक चित्रकारी की है। इससे गांव की प्राकृतिक सुंदरता और बढ़ जाती है।

दिशा सालियान की मौत मामले में CBI की एंट्री! बॉम्बे HC के आदेश के बाद FIR

मुंबई, एजेंसी। बॉम्बे हाई कोर्ट के आदेश पर सेंट्रल ब्यूरो ऑफ़ इन्वेस्टिगेशन (CBI) ने सोमवार को दिशा सालियन मामले की गहन जांच के लिए FIR दर्ज की। यह घटनाक्रम सुशांत सिंह राजपूत की मैनेजर की छत से गिरने के बाद संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत के बाद सामने आया है। अब CBI पूरे मामले की जांच करेगी। ध्यान देने वाली बात है कि सालियन 8 जून, 2020 को मृत पाई गई थीं, जो मुंबई के बांद्रा में राजपूत के घर पर उनके मृत पाए जाने से कुछ दिन पहले की घटना है। गौरतलब है कि उनकी मौत को शुरू में 'एक्सीडेंटल डेथ रिपोर्ट' (ADR) के तौर पर दर्ज किया गया था। हाल ही में, बॉम्बे हाई कोर्ट ने CBI को FIR दर्ज करने और सालियन की मौत से जुड़े हालात की जांच करने का निर्देश दिया था। इस मामले की सुनवाई के दौरान, जस्टिस भारती डांगरे और जस्टिस मंजूषा देशपांडे की डिवीज़न बेंच ने इस बात पर चिंता जताई थी कि सालियन के परिवार के हत्या के आरोपों के बावजूद सिर्फ़ ADR ही दर्ज किया गया था। इससे पहले, बॉम्बे हाई कोर्ट ने यह भी गौर किया था कि सालियन की मौत के पांच साल बाद भी उनके परिवार को पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट और ADR की कॉपी नहीं दी गई थी। उन्होंने तथ्य वैसे ही बताए जैसे वे थे और उन्हें वह सब कुछ बताया जो उनकी बेटी के साथ हुआ था। उन्होंने कहा, 'मैंने सभी नाम बताएः आदित्य, सूरज पंचोली, डिनो मोरिया और बॉडीगार्ड। उन्होंने सब कुछ नोट कर लिया।

जाली नोटों के बाद अब नकली सिक्के: 25 साल और 400 का कमीशन, एक सिक्के पर आती थी पांच रुपये की लागत

आर्यावर्त संवाददाता

सहारनपुर। सहारनपुर में नकली सिक्के बनाने वाले गिरोह के पांच सदस्यों की गिरफ्तारी होने से पुलिस पूछताछ में चौंकाने वाली बात सामने आई हैं। गिरोह का मुख्य सरगना उपकार लूथरा उर्फ अभय प्रताप सिंह वर्ष 2001 से नकली सिक्के बनाने के धंधे में लगा हुआ था। उसने गिरोह के साथ मिलकर सहारनपुर में भी नकली सिक्कों की फैक्टरी लगाने की तैयारी कर ली थी। इससे पहले ही पुलिस ने गिरोह का भंडाफोड़ कर दिया। गिरोह का मुख्य सरगना पंजाब निवासी उपकार लूथरा उर्फ अभय प्रताप सिंह वर्ष 2001 से नकली सिक्के बनाने के धंधे में लगा हुआ था। पहले वह सर्राफ था। इसलिए उसे सिक्के बनाने की अच्छी प्रैक्टिस थी। नकली सिक्कों के मामले में आरोपी उपकार को दिल्ली पुलिस ने वर्ष 2017 में

पकड़ा था। उस पर एक लाख रुपये का इनाम भी घोषित था। तिहाड़ जेल में ही उसकी मुलाकात पकड़े गए आरोपी हिमांशु से हुई थी। दोनों ने तिहाड़ जेल में कुछ नया करने की योजना बनाई। इसके बाद वर्ष 2021 में जेल से बाहर आए।

दोनों ने मिलकर गिरोह खड़ा किया और नए सदस्यों को जोड़ा। इसके बाद नकली सिक्के बनाने का काम आगे बढ़ाने के लिए सहारनपुर में भी कुछ लोगों को अपने साथ मिलाया गया। पुलिस की पूछताछ में सामने आया कि गिरोह के सदस्य सहारनपुर में नकली सिक्के बनाने की फैक्टरी स्थापित करने की योजना बना रहे थे। इसके लिए स्थानीय स्तर पर लोगों को जोड़ने और काम शुरू करने की तैयारी की जा रही थी। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि गिरोह के सदस्य सहारनपुर में किन लोगों के संपर्क में थे और फैक्टरी लगाने की योजना किस स्तर तक पहुंच चुकी थी।

एक सिक्के पर आती थी पांच रुपये की लागत

पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपियों को चार हजार रुपये के सिक्के बाजार में चलाने पर 400 रुपये का कमीशन मिलता था। 20 रुपये के एक सिक्के पर पांच रुपये की लागत आती थी। 15 रुपये का मुनाफा होता था। यदि हिसाब लगाया जाए तो आरोपियों ने साढ़े तीन करोड़ सिक्के बनाए हैं। इन पर 17.50 करोड़ रुपये खर्च किए, जबकि 52.50 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया।

अवैध संपत्तियों की होगी जांच

एसएसपी अभिनंदन ने बताया कि नकली सिक्के बनाने के मामले में गिरफ्तार आरोपियों की अवैध तरीके से अर्जित संपत्तियों की जांच कराई जाएगी। जांच में यदि संपत्तियां अपराध से अर्जित पाई जाती हैं तो उन्हें जब्त करने की कार्रवाई की जाएगी। पुलिस गिरोह की आर्थिक गतिविधियों और इससे जुड़े अन्य लोगों की भी जांच कर रही है।

आरोपी हिमांशु पर तीन मुकदमे हैं दर्ज

पकड़े गए आरोपी हिमांशु उर्फ गुल्लू पर तीन मुकदमे दर्ज हैं। यह तीनों मुकदमे वर्ष 2015 में दर्ज हुए थे और सभी नानौता थाने में दर्ज हैं। मुख्य सरगना उपकार लूथरा पर दिल्ली में मुकदमे दर्ज हैं।

70 करोड़ के नकली सिक्के खपाने वाले गिरोह के सरगना समेत पांच गिरफ्तार

सहारनपुर में नकली नोटों के बाद अब नकली सिक्कों का बड़ा खेल सामने आया है। शहर कोतवाली पुलिस ने एसओजी और सर्विलांस टीम के साथ मिलकर नकली सिक्के बनाने और बाजार में खपाने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया है। पांच बदमाशों को गिरफ्तार करके उनके कब्जे से 1.28 लाख के नकली सिक्के, छह मशीनें, डाई, पांच लाख के अधबने सिक्के आदि बरामद किए हैं।

आरोपी अब तक बाजार में 70 करोड़ रुपये से ज्यादा के नकली सिक्के खपा चुके हैं। पुलिस लाइन में रविवार को पत्रकार वार्ता में एसएसपी अभिनंदन सिंह ने बताया कि जांच में सामने आया कि पकड़े गए आरोपी हरियाणा के सोनीपत में नकली सिक्के बनाते थे। हरियाणा, पंजाब, यूपी और बिहार में खपाते थे। गिरोह का सरगना पंजाब के मोहाली का रहने वाला है।

एक बिहार के मधुबनी और दो यूपी के सहारनपुर व एक संत रविदास नगर जिले के रहने वाले हैं। एसएसपी ने बताया कि पुलिस को कुछ दिनों से बाजार में नकली सिक्के चलाने की सूचना मिल रही थी। शहर कोतवाली पुलिस, एसओजी और सर्विलांस टीम ने गिरोह को पकड़ने के लिए जाल बिछाया।

इसी मामले में कुछ दिन पहले दो युवकों को हिरासत में लिया गया था। पूछताछ में तीन अन्य सदस्यों के नाम सामने आए। इसके बाद इनकी गिरफ्तारी की गई है। मामले की जांच चल रही है।

बाजार, शराब ठेकों और टोल प्लाजा पर खपाते थे सिक्के

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि 20-20 रुपये के नकली सिक्के तैयार करके बाजार में चला रहे थे। सरकारी शराब के ठेकों और टोल प्लाजा पर भी नकली सिक्के खपाने की बात स्वीकार की है। गिरोह के पास सिक्के बनाने और उनकी फिनिशिंग करने के लिए मशीनों से लेकर डाई, घिसाई पत्थर और अन्य उपकरण मौजूद थे।

इन्हें गिरफ्तार किया गया

पुलिस ने जुबली पार्क से गिरोह के सरगना उपकार लूथरा उर्फ अभय प्रताप सिंह निवासी टावर डी-पांच पेंटाहोम सोसायटी जिरखपुर मोहाली, हिमांशु उर्फ गुल्लू निवासी बरसी, सहारनपुर, कुलदीप निवासी आवास विकास सहारनपुर, संतोष चौरसिया उर्फ जनार्दन निवासी लड्डू गांव मधुबनी बिहार और अनुराग पाल उर्फ लंकेश निवासी पीपरीश रामेश्वरम जिला संत रविदासनगर (भदोही) को गिरफ्तार किया।

डायरिया केस की रिपोर्टिंग हरहाल में सुनिश्चित करें चिकित्सा इकाई : एसीएमओ

» 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम के साथ डायरिया रोको अभियान की समीक्षा

आर्यावर्त संवाददाता

फ़िरोज़ाबाद। स्वास्थ्य विभाग के तत्वावधान में सोमवार को मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय सभागार में 'डायरिया से डर नहीं' कार्यक्रम की त्रैमासिक समीक्षा बैठक हुई I इसके साथ ही गत 25 जून से 25 अगस्त तक चलाये गए डायरिया रोको अभियान की भी समीक्षा हुई। बैठक पापुलेशन सर्विसेज इंटरनेशनल इंडिया (पीएसआई इंडिया) व केनव्यू के सहयोग से आयोजित की गयीI

इस मौके पर अपर मुख्य

चिकित्सा अधिकारी (एसीएमओ) डॉ. फारुख अहमद ने सभी प्रभारी चिकित्सा अधिकारी (एमओआईसी) को निर्देशित किया कि समस्त चिकित्सा इकाइयों पर डायरिया केस की रिपोर्टिंग हरहाल में सुनिश्चित करें। एसीएमओ डॉ. पवन वर्मा ने कहा कि डायरिया से डर नहीं कार्यक्रम के अन्तर्गत आशा कार्यकर्ताओं, आशा संगिनी, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को पीएसआई इंडिया के सहयोग से प्रशिक्षित किया किया जा चुका है I इसके साथ ही डायरिया रोको अभियान (स्टॉप डायरिया कैम्पेन 2026) के दौरान डायरिया से बचाव और प्रबन्धन हेतु प्रचार-प्रसार भी किया गया ।

समीक्षा बैठक में पीएसआई इंडिया की प्रतिनिधि कोमल घई ने डायरिया से डर नहीं कार्यक्रम की अब तक की गतिविधियों के बारे में विस्तार से बताया I हेल्थ मैनेजमेंट इन्फार्मेशन सिस्टम (एचएमआईएस) की रिपोर्ट की भी समीक्षा की गयीI डीसीपीएम रवि कुमार ने बेहतर कार्य करने हेतु प्रेरित किया I शहरी स्वास्थ्य समन्वयक प्रवल प्रताप सिंह ने डायरिया कार्यक्रम के तहत की जाने वाली गतिविधियों की वजह से होने वाले सुधार के बारे मे चर्चा की। इसके साथ ही यूपीएचसी पर बनाए गए ओआरएस एवं ज़िंक कार्नर को लेकर चर्चा की। जिला कार्यक्रम प्रबन्धक (डीपीएम) भानु प्रताप सिंह ने रिपोर्टिंग में सुधार के बारे में चर्चा की I उन्होंने कहा कि डायरिया की पहचान समय पर होना और आवश्यक उपचार मुहैया कराना अत्यंत आवश्यक है। एचएमआईएस और ई कवच के आंकड़ों को प्रति माह अपडेट करना सुनिश्चित करें। उन्होंने एक सप्ताह में डाटा इम्प्रूव करने का निर्देश भी दिया।

बैठक में जिला महिला अस्पताल के प्रतिनिधि, चिकित्सा अधिकारी , बीपीएम, बीसीपीएम, फार्मासिस्ट, एचएमआईएस ऑपरेटर और सहयोगी पार्टनर के साथ ही पीएसआई इंडिया की ओर से राजेश कुमार प्रजापति, कैफुल हसन आदि उपस्थित रहे ।

राहुल गांधी को हाईकोर्ट से झटका, वॉइस सैंपल अर्जी खारिज

सुल्तानपुर। अमित शाह पर टिप्पणी से जुड़े मानहानि मामले में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है। हाईकोर्ट ने राहुल गांधी की वॉइस सैंपल से जुड़ी अर्जी को खारिज कर दिया है।

मामला 2018 का है। कर्नाटक चुनाव प्रचार के दौरान राहुल गांधी ने गृहमंत्री अमित शाह पर कथित आपत्तिजनक टिप्पणी की थी। इसको लेकर भाजपा नेता विजय मिश्रा ने सुल्तानपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट में मानहानि का मुकदमा दर्ज कराया था, जो तब से विचाराधीन है। बताया जा रहा है कि इस केस में राहुल गांधी की ओर से वॉइस सैंपल को लेकर निचली अदालत में अर्जी दी गई थी। अदालत के फैसले के खिलाफ वादी एवं तत्कालीन भाजपा उपाध्यक्ष विजय मिश्रा की तरफ से हाईकोर्ट में चुनौती दी गई, लेकिन हाईकोर्ट ने अर्जी खारिज कर दी। अब एमपी-एमएलए कोर्ट में इस मामले की अगली सुनवाई 16 सितंबर को होगी।

संक्षेप

जीआरपी ने अवैध वीयर के अभियुक्त को पकड़ा

जौनपुर। रेल में बढ़ती चोरी तस्करी की घटनाओ के रोकथाम हेतु चलाये जा रहे चेकिंग अभियान के तहत थानाध्यक्ष श्री सुनील कुमार गोंड, थाना जीआरपी जौनपुर के निर्देशन में उपनिरीक्षक हरिकेश, जीआरपी चैकी प्रभा शाहगंज थाना जीआरपी सहयोगियों के साथ शाहगंज प्लेटफार्म प्लेटफार्म सं0-01 पर आजमगढ की तरफ एक अभियुक्त से अभियुक्त बोरी के अन्दर कुल 48 बोतल (24 लीटर) अवैध बियर बरामद हुआ ।6 हजार की वीयर` कब्जा पुलिस में लेते धारा 60 आबकारी अधि0, पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्यवाही की अभियुक्त- अंकित गुप्त पुत्र मुनीलाल निबासी पूगरहादी थाना फूलपुर जनपद आजमगह अवैध रूप से बियर को गेल के माधयम से बिहार राज्य ले जाकर अधिक दामों पर बेचता है।

नि :शुल्क कान शिविर में बच्चों की हुई जांच

जौनपुर। पूर्वांचल स्पीच थेरेपी एंड हियरिंग एड सेंटर नईगंज, द्वारा सोमवार को पतिराजी देवी शिवराम उच्च माध्यमिक विद्यालय चकबाँकी, कुंवरदा, जौनपुर में एक दिवसीय नि :शुल्क कान की सुनने की क्षमता की जांच कैंप का आयोजन किया गया। कैंप के दौरान डॉ. सौरव कुमार सिंह सीनियर क्लिनिकल ऑडियोलॉजिस्ट एवं स्पीच लैंग्वेज पैथोलॉजिस्ट और उनकी टीम द्वारा विद्यालय के बच्चों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के कानों की गहन जांच की गई। आधुनिक उपकरणों के माध्यम से सुनने की क्षमता को आंका गया और जिन्हें सुनने में समस्या या कान से जुड़ी अन्य तकलीफें पाई गईं, उन्हें उचित चिकित्सीय परामर्श व बचाव के उपाय बताए गए। डॉ. एवं उनकी टीम ने इस अवसर पर लोगों को बहरेपन के शुरुआती लक्षणों, समय पर जांच के महत्व और कानों की देखभाल के प्रति जागरूक किया। आयोजन में विद्यालय परिवार का सराहनीय सहयोग रहा। विद्यालय प्रशासन ने इस जनहितकारी पहल की सराहना करते हुए पूरी टीम का आभार व्यक्त किया।

कार खांई में गिरी, दो लोग गंभीर

जौनपुर। प्रयागराज मार्ग पर सोमवार भोर बरगुदर पुल के समीप पुलिस बूथ के सामने तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पेड़ से टकराने के बाद गहरी खाई में जा गिरी। हादसे में कार सवार युवक और युवती गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे में कार का अगला हिस्सा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया और इंजन टूटकर अलग हो गया। दुर्घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। 20 वर्षीय हर्ष सिंह पुत्र सूर्यप्रताप सिंह निवासी बरईपार और श्रेया सिंह निवासी खैरा बगहां, थाना कछवां, वाराणसी मित्र हैं। सोमवार भोर दोनों कार से जौनपुर से मछलीशहर की ओर जा रहे थे। बरगुदर पुल के समीप पुलिस बूथ के सामने पहुंचते ही अचानक कार अनियंत्रित हो गई। सड़क किनारे पेड़ से जोरदार टक्कर के बाद कार खाई में जा गिरी।हादसे की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते हीपुलिस घटनास्थल पर पहुंची। पुलिस ने दोनों घायलों को बाहर निकलवाकर एंबुलेंस की मदद से जिला अस्पताल भेजवाया। चिकित्सकों के अनुसार दोनों की हालत गंभीर बनी हुई है।

नव निर्वाचित मंत्री का भव्य स्वागत

जौनपुर। सद्भावना मंच के सदस्यों ने रविवार की रात केरारवीर मंदिर परिसर में दीवानी न्यायालय अधिवक्ता संघ के नवनिर्वाचित मंत्री मनीष सिंह का अंगवस्त्रम एवं माल्यार्पण कर ऐतिहासिक स्वागत किया। इस दौरान सदस्यों ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अधिवक्ता समाज के हित में बेहतर कार्य करने की अपेक्षा जताई।स्वागत समारोह से पूर्व श्री सिंह ने बाबा केरार वीर मंदिर में मत्था टेका और पूजा-अर्चना किया। मनीष सिंह ने कहा कि अधिवक्ता समाज न्याय व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। अधिवक्ताओं के हितों की रक्षा, उनकी समस्याओं के समाधान और न्यायिक व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए हरसंभव प्रयास किया जाएगा। सद्भावना एवं आपसी सहयोग से ही समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। नीरज सिंह, सुधांशु सिंह, राजकुमार रघुवंशी, रोहित सिंह, भूपेंद्र सिंह, गौतम गुप्ता, वरिष्ठ पत्रकार राजकुमार सिंह और आनंद कुमार सिंह, अशोक कुमार, आदित्य निकुम्भ, निखिल, रजत सिंह, शिवम, विवेक सिंह आदि प्रमुख रहे।

यूपी में भाजपा बनाम भाजपा : यहां हुईं दो महापंचायतें, विधायक के पक्ष व विपक्ष में जुटीं कई गांवों की बिरादरियां

आर्यावर्त संवाददाता

गाजियाबाद। गाजियाबाद जिले के लोनी में एक प्रेसवार्ता से शुरू हुआ विवाद अब भाजपा बनाम भाजपा की जंग बन गया है। रविवार को भी दोनों पक्षों ने अलग-अलग महापंचायत कर शक्ति प्रदर्शन किया। दोनों जगह आरोप-प्रत्यारोप लगाए गए। इसके बाद लोनी में सियासी माहौल पूरी तरह से गरमा गया है। क्षेत्र में तनाव की स्थिति को देखते हुए पुलिस अलर्ट पर है। करीब 1000 लोगों को शांति व्यवस्था के लिए पाबंद किया गया है। वहीं, संगठन ने इसे दोनों पक्षों का आपसी मामला बताया है। सिरौली गांव स्थित एक स्कूल में रविवार को लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर के समर्थन में महापंचायत बुलाई गई। इसमें आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में लोग पहुंचे। आयोजकों ने दावा किया कि यह 36 बिरादरियों की हिंदू महापंचायत है। इसमें हाल की आपराधिक घटनाओं, सामाजिक विवाद और कानून-व्यवस्था को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। महापंचायत में तीन अहम प्रस्ताव पास किए गए। पहला प्रस्ताव था कि 36 बिरादरियां पूरी तरह से विधायक नंदकिशोर गुर्जर के साथ है। दूसरा प्रस्ताव विधायक का विरोध करने वाले भाजपा नेताओं की जांच को लेकर था, जिसमें कहा गया कि जो लोग पार्टी में रहकर विधायक का विरोध कर रहे हैं, उनकी भूमिका की जांच होनी चाहिए। तीसरे प्रस्ताव में सामाजिक विवादों के समाधान के लिए 51 सदस्यीय समिति गठित करने का निर्णय लिया गया, जो क्षेत्र में होने वाले सामाजिक विवादों को आपस में बैठकर सुलझाएगी। लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर ने पंचायत को संबोधित करते हुए कहा कि वह हिंदुत्व और गौरक्षा के मुद्दे पर अपनी लड़ाई जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि लोनी की शांति खराब करने वालों का हर स्तर पर विरोध किया जाएगा। उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। महापंचायत में वक्ताओं ने आरोप लगाया कि हाजी सलमान के मामले में कुछ नेताओं ने लखनऊ में विपक्ष के मुखिया से वार्ता कर लोनी विधायक की हत्या की योजना बनाई थी।

कसाना के पक्ष में 12 गांवों की पंचायत

लोनी विधायक के विरोध व भाजपा नेता अनिल कसाना के पक्ष में रिस्तल गांव में महापंचायत का आयोजन किया गया। इसमें कोतवालपुर, राजपुर, भूपखेड़ी, धारीपुर, सिरोरा, रेवड़ी, गढ़ी कलजरी, जावली, रिस्तल, महमूदपुर, शकलपुर और सीती समेत 12 गांवों के लोग शामिल हुए। वक्ताओं ने कहा कि विधायक नंदकिशोर गुर्जर ने समाज के लोगों के साथ अभद्रता की है। इसे बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। लोनी की पहचान सामाजिक एकता और आपसी भाईचारे के लिए रही है, लेकिन विधायक के आचरण से इस भाईचारे को नुकसान पहुंच रहा है। लोनी विधायक के कथित आचरण के खिलाफ निंदा प्रस्ताव भी पेश किया गया और भाजपा के शीर्ष नेतृत्व से कार्रवाई की मांग की गई। सभा में लोगों ने सामाजिक सौहार्द, शांति और भाईचारा कायम रखने का संकल्प लिया। अनिल कसाना ने कहा कि यह मामला चुनाव या राजनीति का नहीं है। यह समाज के सम्मान का मामला है। आने वाले समय में जनता इसका जवाब देगी।

लोगों की भी हो रही निगरानी

डीसीपी देहात सुरेंद्र नाथ तिवारी ने बताया कि करीब 1000 लोगों को शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पाबंद किया गया है। इसमें वे लोग भी शामिल हैं, जो क्षेत्र का माहौल खराब कर सकते हैं। वहीं, पंचायतों और अन्य कार्यक्रमों में शामिल लोगों की भी निगरानी की जा रही है। लोनी में हुई पंचायतों को लेकर कोई अलग से फोर्स तैनात नहीं की गई थी, स्थानीय पुलिस निगरानी रख रही थी। दोनों पक्षों का आपसी मामला है। पार्टी से जुड़ा कोई विवाद नहीं है। इस संबंध में हाईकमान को जानकारी दी गई है।

चैनपाल सिंह, जिला अध्यक्ष, भाजपा

बेटे को पढ़ाने के लिए छोड़ी दो-दो सरकारी नौकरी... अब उसी ने तोड़ दी बुजुर्ग पिता की टांग, कमरे में किया बंद

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। नोएडा में बुजुर्ग पिता के साथ हैवानियत का एक मामले सामने आया है। आरोप है कि बेटे ने संपत्ति हड़पने के लिए 80 वर्षीय पिता वीरेंद्र सिंह को प्रताड़ित किया और उनकी जांघ की हड्डी तोड़कर कमरे में बंद कर दिया। गंभीर हालात में बेटी और नाती उन्हें अस्पताल लेकर पहुंची, जहां उनका इलाज चल रहा है। परिवार ने आरोपी बेटे और उसके सहयोगियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

जानकारी के मुताबिक मैनपुरी के खपरी मोहल्ले में रहने वाले 80 वर्षीय वीरेंद्र सिंह ने अपने इकलौते बेटे राजपाल सिंह के बेहतर भविष्य के लिए जिंदगी भर मेहनत की। पत्नी की मौत के बाद उन्होंने पहले फौजी और फिर अमीन की नौकरी तक छोड़ दी, ताकि बेटे की अच्छी तरह से परवरिश हो सके उसे पढ़ा लिखाकर काबिल बना सके। लेकिन उन्हें क्या

पता था कि एक दिन उन्हें का बेटा उनके साथ इस तरह की हरकत करेगा। आरोप है कि पिछले सप्ताह राजपाल ने अपने 80 वर्षीय पिता की जांघ की हड्डी तोड़ दी और उन्हें कमरे में बंद कर दिया। 6 सितंबर को ग्रेटर नोएडा में रहने वाली उनकी बेटी और दिल्ली में रहने वाली नाती बुजुर्ग से मिलने मैनपुरी पहुंचे वहां उन्होंने वीरेंद्र सिंह को बिना पंखे वाले कमरे में दर्द से कराहते हुए देखा। बुजुर्ग की हालत देखकर उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। परिजन उन्हें नोएडा अस्पताल लेकर पहुंचे तो जांच में सामने आए कि उनकी जांघ की हड्डी टूटी हुई है। इसके बाद 7 सितंबर को बेटी और नाती ने उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया। फिलहाल उनका इलाज नोएडा के सेक्टर 39 स्थित जिला अस्पताल में जारी है। बुजुर्ग के नाती अभिषेक का आरोप है कि उनके नाना की जांघ की हड्डी गिरने से नहीं टूटी, बल्कि प्रहार करने से टूटी है।

आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग

डॉक्टर ने बुजुर्ग की हालात को देखते हुए सर्जरी करने से मना कर दिया है। परिवार अब दिल्ली के एम्स या किसी अच्छे अस्पताल में इलाज कराने का प्रयास कर रहा है। फिलहाल परिजनों का कहना है कि आरोपी बैठे और उसके साथियों ने बुजुर्ग को लंबे समय से परेशान किया है परिवार ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की है। बेटे की इस करतूत ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा किया है की संपत्ति के विवाद को लेकर एक बेटे ने उसे रिश्ते पर सवाल खड़ा कर दिया है जिसमें पिता ने अपनी जिंदगी और कमाई बेटे को काबिल बनने में लगा दी लेकिन बुढ़ापे में इस बेटे पर पिता को प्रताड़ित करने और मारपीट करने का आरोप लगा है।

'मुझे और गुलाब को पति-जेठ ने पिलाई थी जहरीली कोल्डड्रिंक' इटावा कांड में देवर की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

इटावा। 'मुझे और गुलाब को कोल्डड्रिंक पिलाई गई थी उसके बाद से हम दोनों की तबीयत बिगड़ गई। पति और जेठ ने ही पीने को दी थी' इटावा के सौथना गांव में 38 साल की ममता अब भी जिंदगी की जंग अस्पताल में लड़ रही है। उसके चचेरे देवर 34 वर्षीय गुलाब सिंह की जहरीली कोल्डड्रिंक पीने से मौत हो गई।

हालत में सुधार के बाद ममता ने अपने पति महावीर सिंह और जेठ नरेश पर कोल्डड्रिंक में जहरीला पदार्थ मिलाकर पिलाने का आरोप लगाया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतजार है।

मामला ऊसराहार थाना क्षेत्र के सौथना गांव का है। ममता की शादी करीब 14 साल पहले महावीर सिंह से

हुई थी। ममता के अनुसार, उसका पति शराब पीने का आदी है और कोई काम नहीं करता था। घर का खर्च चलाने और चार बच्चों के भरण-पोषण के लिए पैसे नहीं मिलने को लेकर दोनों के बीच अक्सर विवाद होता था। इसी दौरान ममता के अपने पति के चचेरे भाई गुलाब सिंह से प्रेम संबंध बन गए। ममता का कहना है कि गुलाब सिंह ही उसके और उसके चार बच्चों के खर्च में मदद करता था। दोनों के बीच संबंध की जानकारी महावीर को भी थी और वह इससे नाराज रहता था।

पति के घर में ही रहने लगी थी ममता

ममता के मुताबिक, गुलाब सिंह के साथ संबंध बनने के बाद वह उसके साथ अपने पति के घर में ही रहने लगी थी। दोनों के एक साथ रहने को लेकर घर में कई बार विवाद भी हुआ। गुलाब की मां का भी दावा है कि उसका बेटा पिछले करीब एक साल से ममता और उसके बच्चों की देखभाल कर रहा था। इसी बात को लेकर महावीर उससे नाराज रहता था।

शाम पांच बजे पी थी कोल्डड्रिंक

रविवार शाम करीब पांच बजे ममता और गुलाब सिंह ने कोल्डड्रिंक पी। इसके कुछ देर बाद ही दोनों की तबीयत अचानक बिगड़ गई। ममता को उल्टियां होने लगीं, जबकि गुलाब सिंह की हालत ज्यादा गंभीर हो गई। परिजन दोनों को सरसईनावर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लेकर पहुंचे। हालत गंभीर होने पर डॉक्टरों ने दोनों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहां पहुंचने पर ईएमओ डॉ. ओमकांत राजपूत ने गुलाब सिंह की जांच की और उसे मृत घोषित कर दिया। वहीं ममता को भर्ती कर उपचार शुरू किया गया।

पति और जेठ ने दी थी कोल्डड्रिंक

अस्पताल में इलाज के दौरान ममता की हालत में सुधार हुआ तो उसने पुलिस और परिजनों के सामने गंभीर आरोप लगाए। ममता का कहना है कि उसका पति महावीर सिंह अपने भाई नरेश के साथ घर आया था। दोनों ने उसे और गुलाब सिंह को कोल्डड्रिंक पीने के लिए दी थी।

ममता के अनुसार, कोल्डड्रिंक पीने के बाद ही दोनों की तबीयत बिगड़ गई। गुलाब सिंह की हालत ज्यादा खराब होने पर वह घर से बाहर जाकर लेट गया। बाद में उसकी हालत और बिगड़ गई और अस्पताल में उसकी मौत हो गई।

गुलाब की मां ने भी लगाए आरोप

गुलाब सिंह की मां ने भी महावीर और नरेश पर कोल्डड्रिंक में कुछ मिलाकर पिलाने का आरोप लगाया है। परिवार का कहना है कि गुलाब के ममता और उसके बच्चों की देखभाल करने से महावीर नाराज था। ऊसराहार थाना प्रभारी नरेंद्र मिश्रा के अनुसार, पुलिस को दोनों के जहरीला पदार्थ पीने की सूचना मिली थी। घटना के कारणों की जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक, दोनों के अलग-अलग तरीके से जहरीला पदार्थ खाने की बात भी सामने आई है। अब पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के दौरान सामने आने वाले साक्ष्यों के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सीएम योगी प्रदेश के अधिवक्ताओं को दी कैशलेश इलाज की सौगात, बोले-

'अदालत पर आम आदमी का विश्वास हो कायम'

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने हाईकोर्ट और जनपद न्यायालय के के अधिवक्ताओं को पांच लाख रुपये कैशलेस इलाज की सुविधा का तोहफा दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट बार एसोसिएशन के कार्यक्रम में पहुंचे सीएम ने कहा कि अधिवक्ता कल्याण निधि की राशि डेढ़ लाख से बढ़ाकर पांच लाख करने का एलान किया। उन्होंने कहा कि अधिवक्ताओं के कल्याण के लिए जो भी प्रस्ताव हाईकोर्ट की तरफ से आएगा उसमें राज्य सरकार पूरा सहयोग करेगी। उन्होने युवा अधिवक्ताओं से आग्रह किया कि वह सिर्फ व्यवसायिक ही नहीं बल्कि न्यायपालिका की मजबूती और आम जनता में न्याय के प्रति भरोसा बढ़े इस दिशा में भी कार्य करें। योगी ने हिंदी दिवस, हरितालिका तीज और गणेश चतुर्थी के अवसर पर आस्था की इस पवित्र भूमि प्रयागराज से सभी को बधाई। कहा कि गणपति को हमारी आध्यात्मिक विरासत में बुद्धि, विवेक और न्याय के देवता के रूप में पूजा जाता है। हरितालिका तीज भी हमारी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण पर्व है।

स्वतंत्रता आंदोलन में प्रयागराज अमूल्य योगदान

देश के प्रबुद्ध समाज में अधिवक्ता समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। समाज की विचारधारा को दिशा देने और उसके विश्वास का प्रतीक बनने में अधिवक्ताओं का योगदान रहा है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने से लेकर स्वतंत्र भारत में शासन-प्रशासन की व्यवस्था के संचालन और लोकतंत्र के सभी स्तंभों को मजबूती प्रदान करने तक अधिवक्ता समाज की अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

प्रयागराज की धरती इसकी गवाह रही है। अनेक ऐसे अधिवक्ता रहे हैं, जिन्होंने इलाहाबाद में विधि व्यवसाय किया और स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। मोतीलाल नेहरू और महामना मदन मोहन मालवीय जैसे नाम देश के स्वतंत्रता आंदोलन को लंबे समय तक आगे बढ़ाने वालों में रहे। वे हर क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी के लिए खड़े होते दिखाई दिए।

400 राज्य विधि अधिकारियों को मिलेगा टैबलेट

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आधुनिक तकनीकी से जोड़ने के सरकार 400 विधि अधिकारियों को टैबलेट देगी। जिससे शासन के कौन से मुकदमे कोर्ट में चल रहे हैं इसकी जानकारी उनको मिलती रहेगी।

राजेंद्र प्रसाद की भारतीय संस्कृति में थी आस्था

प्रयागराज आने पर जब संगम में डुबकी लगाते हैं तो देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद का स्मरण होता है। प्रत्येक कुंभ के दौरान उनका यहां प्रवास होता था। वे माघ मेले में कल्पवास भी करते थे। उनका कल्पवास केवल व्यक्तिगत आध्यात्मिक साधना का विषय नहीं था, बल्कि उन्होंने राष्ट्र जीवन के लिए जो मर्यादा तय की थी और राष्ट्रसेवा का जो संकल्प लिया था, उन आदर्शों का यहां पालन किया।

कुंभ और माघ मेले के दौरान उनका लंबे समय तक रहना भारत की विरासत और जनआस्था के प्रति उनके गहरे सम्मान का उदाहरण था। राष्ट्रपति बनने के बाद जब उन्हें सोमनाथ मंदिर के प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया तो उन्होंने स्वयं इसमें भाग लेकर स्वतंत्र भारत की सांस्कृतिक चेतना और गौरवशाली विरासत को सम्मान देने का कार्य किया। यह आज भी लोगों के लिए प्रेरणा का विषय है।

हमारी सरकार ने डॉ. राजेंद्र प्रसाद के नाम पर राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय स्थापित करने का संकल्प लिया है। विश्वविद्यालय का कार्य प्रारंभ हो चुका है और इसका भव्य परिसर भी बहुत जल्द तैयार होगा। प्रयागराज की धरती ने भारत की संवैधानिक चेतना और विधिक विमर्श को दिशा दी है। यहां से अनेक न्यायविद, अधिवक्ता और जननेता निकले, जिन्होंने भारत की संवैधानिक और राजनीतिक दिशा में मील के पत्थर स्थापित किए।

बार और बेंच न्याय व्यवस्था के पहिये

लोकतंत्र के तीनों प्रमुख स्तंभ अपनी-अपनी व्यवस्था के अनुसार कार्य करते हैं। इनके बीच समन्वय से ही लोकतंत्र मजबूत होता है। भारतीय लोकतंत्र में न्यायपालिका सुशासन के लक्ष्यों को प्राप्त करने और विधि का शासन स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बार और बेंच न्याय व्यवस्था के रथ के दो पहिए हैं। दोनों के बीच सदैव समन्वय दिखाई देना चाहिए। न्याय प्रशासन के लिए आपसी सम्मान, शिष्टाचार, संवाद और सहयोग बार-बेंच के बीच निरंतर बना रहना चाहिए।

पुलिस के प्रशिक्षण की व्यवस्था बदली

2017 से पहले उत्तर प्रदेश पुलिस में करीब 45 से 50 प्रतिशत पद खाली थे। जब भर्ती की प्रक्रिया शुरू हुई तो प्रशिक्षण क्षमता भी सीमित थी। उत्तर प्रदेश पुलिस एक वर्ष में लगभग तीन हजार प्रशिक्षुओं को ही प्रशिक्षण दे पाती थी। बुनियादी सुविधाओं का भी अभाव था। हमने प्रशिक्षण क्षमता बढ़ाकर सात हजार की और आधुनिक सुविधाएं उपलब्ध कराईं। हर जनपद में पुलिस के लिए आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। जो लोग 12-12 घंटे ड्यूटी करते हैं, उनके लिए बेहतर आवासीय और अन्य सुविधाएं होना जरूरी है। यदि हम रक्षक के रूप में पुलिस से बेहतर भूमिका की अपेक्षा करते हैं तो उन्हें आवश्यक सुविधाएं देना भी हमारी जिम्मेदारी है। इसी प्रकार न्यायपालिका के पास भी बेहतरीन आधारभूत सुविधाएं होनी चाहिए। अधीनस्थ न्यायालयों की दशा पहले खराब थी। कई न्यायालय किराए के भवनों में चल रहे थे। अधिवक्ताओं के बैठने तक की समुचित व्यवस्था नहीं थी।

उत्तर प्रदेश में पूरी व्यवस्था को बदलने के लिए प्रभावी कदम उठाए गए हैं। पहले गंभीर अपराधों के मामलों में गवाहों के मुकर जाने से दोषियों को सजा दिलाना चुनौती बन जाता था। अपराधियों को जेल से अदालत लाने के लिए जर्जर और असुरक्षित वाहनों का इस्तेमाल होता था और हमलों की शिकायतें भी आती थीं। कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच बेहतर समन्वय के साथ सुशासन को जनता की प्राथमिकता बनाया गया है। आधुनिकीकरण के दौर में प्रदेश पीछे न रहे, इसके लिए न्यायिक आधारभूत ढांचे को मजबूत करने का प्रयास किया गया है। अभियोजन प्रणाली को ऑनलाइन किया गया है।

नाबालिग बालिका को बहला-फुसलाकर ले जाने के मामले में 17 वर्षीय बाल अपचारी पुलिस संरक्षण में

लखनऊ। सैरपुर थाना क्षेत्र में नाबालिग बालिका को बहला-फुसलाकर ले जाने, गलत तरीके से कैद रखने और मुख्य आरोपी का सहयोग करने के मामले में पुलिस ने 17 वर्षीय बाल अपचारी को पुलिस संरक्षण में लिया है। पुलिस के अनुसार बाल अपचारी मुकदमे में वांछित था और उसे तरहिया मोड़ के पास से पकड़ा गया। पुलिस के मुताबिक 22 जुलाई 2026 को बालिका की मां ने सैरपुर थाने में अपनी करीब 14 वर्षीय नाबालिग पुत्री के घर से कहीं चले जाने के संबंध में प्रार्थना पत्र दिया था। इसके आधार पर थाना सैरपुर में मुकदमा अपराध संख्या 84/2026 धारा 137(2) बीएनएस के तहत अज्ञात के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया था। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए 29 जुलाई को मुख्य आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

हिन्दी हो विश्व की नंबर एक भाषा : इं. वी. के. मिश्र

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। कालीचरण पीजी कॉलेज में हिन्दी दिवस पर सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में प्रबंधक इं. वी.के. मिश्र ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिन्दी विश्व की नंबर-एक भाषा बने। उन्होंने कहा कि आज विश्व में सर्वत्र हिन्दी भाषा की सामान्य बोल-चाल में उपस्थिति, ज्ञान-विज्ञान, व्यापार चिकित्सा व लोक-जीवन के परस्पर सम्वाद में हिन्दी का निरंतर प्रयुक्त होते जाना हिन्दी को विश्व की नंबर एक भाषा बनाने का प्रबलतम् आधार है।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रो. मंजुला उपाध्याय प्राचार्या, नवयुग कन्या पीजी कॉलेज ने कहा कि हिन्दी की सर्व-समाज ग्राह्यता वैश्विक व्यापार में हिन्दी का बढ़ता प्रभाव निश्चित रूप से हिन्दी की वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ बनाती है।

मुख्य वक्ता जिला सेवा योजन अधिकारी प्रज्ञा त्रिपाठी ने हिन्दी की लोकप्रियता को बढ़ाने में प्रेमचन्द द्वारा हिन्दी को सरल-सहज और सर्वग्राहयता प्रदान करने वाले प्रयासों की सराहना की और आज के दौर में इसे प्रांसगिक बताया। मंचस्थ अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन करते हुए प्राचार्य प्रो. चन्द्रमोहन उपाध्याय ने संगोष्ठी के विषय 'हिन्दी के वर्तमान स्वरूप में प्रेमचन्द के स्त्री विमर्श' पर प्रकाश डालते हुए प्रेमचन्द के साहित्य में बेमेल विवाह, विधवा विवाह तथा लड़कियों के बेचने की कुप्रथा को रेखांकित किया। संगोष्ठी का मंच संचालन हिन्दी विभाग के प्रभारी प्रो. मनोज कुमार पाण्डेय ने किया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक गण और भारी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मायावती ने ब्रिक्स समिट के 'न्यू डेल्ही डिक्लेशन' की तारीफ में पढ़े कसीदे, बताया– कूटनीतिक उपलब्धि

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने दिल्ली में आयोजित BRICS समिट में जारी 'न्यू डेल्ही डिक्लेशन' की तारीफ की है। मायवती ने इसे सूझबूझ भरी कूटनीतिक उपलब्धि बताया है। मायावती ने आज (रविवार को) कहा कि ब्रिक्स देशों के बीच संबंधों को और मजबूत बनाने की इच्छा भी उम्मीद जगाने वाली है।

मायावती ने कहा, 'रूस-यूक्रेन जंग और ईरान के विरुद्ध अमेरिका के मिलिट्री एक्शन की वजह से बढ़े तनाव और टैरिफ लगाए जाने जैसी गंभीर इकोनॉमिक चुनौतियों का सामना कर रहे ब्रिक्स देशों की तरफ से अपनी 18वीं समिट में 'न्यू डेल्ही डिक्लेशन' को सर्वसम्मति से जारी किया जाना आपसी सूझबूझ और डिप्लोमेटिक अचीवमेंट से कम नहीं है।'

BSP सुप्रीमो ने आगे कहा कि ब्रिक्स के देशों के बीच आपसी संबंधों को और मजबूत करने की इच्छा भी उम्मीद जगाती है। इस दिशा में 'ब्रिक्स करेंसी' का डेवलपमेंट भी एक अहम कदम साबित हो सकता है।

ब्रिक्स समिट में भारत के दृष्टिकोण को मिला समर्थन

यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने कहा कि इसके अलावा फिलीस्तीन के मुद्दे पर 'Two-state solution' और 1967 की सीमाओं के आधार पर एक स्वतंत्र फिलीस्तीन राष्ट्र के सपोर्ट के साथ-साथ जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जिक्र करते हुए आतंकवाद के सभी रूपों से निपटने की प्रतिबद्धता जताना भी महत्वपूर्ण है। इससे भारत के नजरिए को उचित सपोर्ट मिला है, जो तारीफ के काबिल है।

मायावती ने कहा, 'पड़ोसी देश चीन के साथ मतभेदों को विवाद का शामिल है।

रूप नहीं लेने देने और दोनों देशों को एक-दूसरे के डेवलपमेंट में पार्टनर के रूप में देखने के दृष्टिकोण के क्या सकारात्मक रिजल्ट सामने आएंगे, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा। हालांकि, दोनों देशों के बीच बॉर्डर विवाद का जितनी जल्दी आपसी सहमति से हल हो जाए, उतना ही बेहतर होगा।

चीन और भारत के बीच कई मुद्दों पर बनी सहमति

गौरतलब है कि BRICS समिट 2026 में भारत और चीन के 'दिल' मिलते नजर आए। भारत-चीन के बीच 7 अहम मुद्दों पर सहमति बन गई है। इनमें संबंधों को दीर्घकालिक और रणनीतिक दृष्टिकोण से देखने, मतभेदों को विवाद में नहीं बदलने देने और सीमा विवाद के निष्पक्ष और स्वीकार्य समाधान तलाशे की बात भी

मऊ के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में पहुंचे ए.के. शर्मा, बांटी राहत सामग्री

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री ए.के. शर्मा ने सोमवार को मऊ जनपद के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का भ्रमण कर प्रभावित नागरिकों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की जानकारी ली। उन्होंने मधुबन और दुबारी क्षेत्र में पहुंचकर बाढ़ की स्थिति का जायजा लिया तथा प्रभावित लोगों से संवाद कर उन्हें हरसंभव सहायता का भरोसा दिलाया।मंत्री ने जनता इंटर कॉलेज परिसर में संचालित राहत शिविर का निरीक्षण किया। उन्होंने शिविर में रह रहे बाढ़ प्रभावित परिवारों से मुलाकात कर उनका कुशलक्षेम जाना और प्रशासन की ओर से उपलब्ध कराई जा रही व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने बाढ़ पीड़ित परिवारों को खाद्य सामग्री के पैकेट, आवश्यक दवाइयां और राहत सामग्री किट वितरित की।ए.के. शर्मा ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत और बचाव कार्य पूरी तत्परता से संचालित किए जाएं। जलभराव वाले निचले इलाकों में फंसे नागरिकों और पशुओं को आवश्यकता के अनुसार तत्काल सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया जाए। राहत शिविरों में रह रहे प्रभावित परिवारों के लिए भोजन, शुद्ध पेयजल, चिकित्सा सुविधा और अन्य आवश्यक सामग्री की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि बाढ़ जैसी आपदा की स्थिति में प्रदेश सरकार प्रत्येक प्रभावित परिवार के साथ पूरी संवेदनशीलता और प्रतिबद्धता के साथ खड़ी है। सरकार की प्राथमिकता है कि कोई भी प्रभावित व्यक्ति राहत और आवश्यक सुविधाओं से वंचित न रहे। दुर्गम और अधिक प्रभावित क्षेत्रों में प्राथमिकता के आधार पर राहत सामग्री पहुंचाई जाए।

मलिहाबाद में गोलीकांड के मामले में 16 वर्षीय बाल अपचारी पुलिस संरक्षण में, तमंचा–कारतूस बरामद

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। मलिहाबाद थाना क्षेत्र के ग्राम ढेढेमऊ स्थित दुर्गेश जनसेवा केंद्र के पास 11 सितंबर को समरेन्द्र कुमार यादव को गोली मारकर घायल किए जाने के मामले में पुलिस ने एक 16 वर्षीय बाल अपचारी को पुलिस संरक्षण में लिया है। उसके कब्जे से 315 बोर का एक अवैध देशी तमंचा और दो जिंदा कारतूस बरामद किए गए हैं।पुलिस के अनुसार घटना के संबंध में नरेन्द्र कुमार पुत्र उमा शंकर यादव निवासी ग्राम सैफलपुर, थाना काकोरी की तहरीरी सूचना पर मलिहाबाद थाने में मुकदमा अपराध संख्या 175/2026 धारा 109(1)/61(1) बीएनएस के तहत दर्ज किया गया था। घटना की गंभीरता को देखते हुए पुलिस टीम लगातार घटना में शामिल लोगों की तलाश और गिरफ्तारी के साथ ही अवैध असलहों की बरामदगी के लिए सुरागरसी और दबिश की कार्रवाई कर रही थी।इसी क्रम में 14 सितंबर को मुकदमे में प्रकाश में आए एक बाल अपचारी ने स्वयं मलिहाबाद थाने पहुंचकर घटना के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी। नियमानुसार बाल कल्याण अधिकारी की मौजूदगी में उसकी जामातलाशी ली गई, जिसमें उसके कब्जे से 315 बोर का एक देशी तमंचा और दो जिंदा कारतूस बरामद हुए। बरामदगी के आधार पर मुकदमे में आर्म्स एक्ट की धारा 9/25 की बढ़ोतरी की गई।पुलिस के मुताबिक पूछताछ में बाल अपचारी ने घटना और उसमें शामिल अन्य व्यक्तियों के संबंध में महत्वपूर्ण जानकारी दी है। प्राप्त जानकारी के आधार पर पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश करने के साथ ही घटना में इस्तेमाल किए गए अन्य अवैध असलहों की बरामदगी के लिए कार्रवाई कर रही है।विद्यालय अभिलेखों के आधार पर बाल अपचारी की जन्मतिथि की जांच में घटना के समय उसकी उम्र 18 वर्ष से कम पाई गई। इसके बाद उसके संबंध में किशोर न्याय से जुड़े प्रचलित विधिक प्रावधानों के तहत कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने उसकी पहचान गोपनीय रखी है। कार्रवाई करने वाली टीम में उपनिरीक्षक प्रमोद कुमार, कांस्टेबल सुशील कुमार और कांस्टेबल मोहित कटारिया शामिल रहे।

संक्षेप

कृष्णानगर में सड़क किनारे मिला मजदूर का शव, गर्दन पर चोट के निशान

लखनऊ। कृष्णानगर थाना क्षेत्र में सोमवार सुबह एसएस ग्रांड होटल के पास सड़क किनारे पड़ी मौरंग पर एक मजदूर का शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया। मृतक की गर्दन पर नुकीली वस्तु से कटने और चोट के निशान पाए गए हैं। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।पुलिस के अनुसार, सोमवार सुबह करीब 6:30 बजे कृष्णानगर थाने को एसएस ग्रांड होटल के पास सड़क किनारे शव पड़े होने की सूचना मिली थी। सूचना पर प्रभारी निरीक्षक पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे और उच्चाधिकारियों को मामले से अवगत कराया। घटनास्थल का निरीक्षण करने के दौरान मृतक की गर्दन पर चोट और कटने के निशान मिले। मौके पर पहुंची फील्ड इकाई की टीम ने आवश्यक साक्ष्य संकलित किए।आसपास मौजूद मजदूरों से पूछताछ के बाद मृतक की पहचान राम बाबू मौर्य (35) पुत्र गोविंद प्रसाद मौर्य, निवासी गोला कुआं, टिकैतगंज, लखनऊ के रूप में हुई। पुलिस के मुताबिक राम बाबू एक निर्माणाधीन भवन में मजदूरी करता था।पुलिस ने परिजनों की मौजूदगी में शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेज दिया। मामले में अन्य विधिक कार्रवाई की जा रही है। पुलिस ने कुछ संदिग्धों को पूछताछ के लिए लिया है और उनसे मिली जानकारी के आधार पर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

राजाजीपुरम में मकान की दूसरी मंजिल से कूदने पर युवक की मौत, जांच में जुटी पुलिस

लखनऊ। राजाजीपुरम क्षेत्र में सोमवार को एक युवक की मकान की दूसरी मंजिल की रेलिंग से नीचे गिरने से मौत हो गई। पुलिस के अनुसार युवक एक मकान में प्रवेश करने के बाद छत के रास्ते दूसरे मकान की छत पर पहुंच गया था। आसपास के लोगों ने उसे देख लिया और रोकने का प्रयास किया, लेकिन युवक ने रेलिंग से नीचे छलांग लगा दी। गंभीर हालत में उसे अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया।पुलिस के मुताबिक सोमवार को सूचना मिली थी कि एक अज्ञात व्यक्ति ई-1287, राजाजीपुरम स्थित मकान में घुस आया है और लोगों के देख लेने पर छत से नीचे कूद गया है। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल युवक को एम्बुलेंस से रानी लक्ष्मीबाई संयुक्त चिकित्सालय, राजाजीपुरम भेजा गया, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।प्रारंभिक जानकारी के अनुसार युवक मकान संख्या ई-1287 के मुख्य द्वार से अंदर प्रवेश कर छत के रास्ते मकान संख्या ई-1291 की छत पर पहुंचा था। आसपास के लोगों ने उसे देख लिया और शोर मचाया। इसके बाद युवक ई-1291 की रेलिंग पर खड़ा हो गया। मौके पर मौजूद लोगों ने उसे नीचे कूदने से रोकने और समझाने का प्रयास किया, लेकिन वह रेलिंग से नीचे कूद गया और गंभीर रूप से घायल हो गया।पुलिस को घटनास्थल पर मौजूद लोगों द्वारा बनाया गया वीडियो भी मिला है।

मड़ियांव पुलिस ने चोरी के सामान के साथ युवक को गिरफ्तार किया

लखनऊ। मड़ियांव पुलिस ने चोरी की घटनाओं का खुलासा करते हुए एक युवक को चोरी के सामान के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से एक स्कूटी, दो मोटरसाइकिल, चार मोबाइल फोन, एक एलईडी टीवी, तीन साड़ी-ब्लाउज, एक लहंगा, एक पेटीकोट, एक पर्स और लोहे की रॉड बरामद की है। पुलिस के अनुसार बरामद सामान में कुछ वस्तुएं दुबग्गा थाना क्षेत्र में दर्ज चोरी के मुकदमे से संबंधित हैं। पुलिस टीम सोमवार को क्षेत्र में गश्त और अपराध की रोकथाम के लिए राधा कृष्ण मंदिर के पास मौजूद थी। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि घरों में चोरी करने वाला एक युवक चोरी के सामान के साथ यासीन बाग में एक पेड़ के नीचे खड़ा है और सामान बेचने की फिराक में है। सूचना पर पुलिस टीम ने मौके पर पहुंचकर संदिग्ध युवक को पकड़ लिया। पूछताछ में उसने अपना नाम शुभम रावत (20) पुत्र रंजीत रावत, निवासी गौरभीट घैला, थाना मड़ियांव, लखनऊ बताया। वह ई-रिक्शा चालक है।पुलिस के मुताबिक बरामद एलईडी टीवी, कपड़े और स्कूटी संख्या यूपी 32 केक्यू 9492 के संबंध में थाना दुबग्गा में मुकदमा दर्ज पाया गया। इसके अलावा बरामद अन्य सामान के संबंध में

मवैया तिराहे से रेलवे छत्ता पुल तक नगर निगम का अतिक्रमण विरोधी अभियान, 06 ठेले और 04 गुमटियां हटाईं

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। शहर में बढ़ते अतिक्रमण और यातायात में आ रही बाधाओं को देखते हुए नगर निगम ने सोमवार को जोन-05 क्षेत्र में सघन अभियान चलाकर सड़क किनारे किए गए अस्थायी अतिक्रमण हटाए। नगर आयुक्त गौरव कुमार के निर्देश पर चलाए गए अभियान के दौरान अतिक्रमण हटाने के साथ ही सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने और प्रतिबंधित प्लास्टिक का इस्तेमाल करने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई।नगर निगम की टीम ने मवैया तिराहे से मवैया रेलवे छत्ता पुल तक सड़क किनारे ठेले, ठेलिया, खुमचा, गुमटी और काउंटर आदि के रूप में किए गए अस्थायी अतिक्रमण हटाए। अभियान के दौरान छह ठेले, चार गुमटियां और दो काउंटर हटाए गए, जबकि एक लकड़ी का ठेला जब्त किया गया। कार्रवाई के दौरान अतिक्रमण करने वालों को सड़क और सार्वजनिक स्थानों पर दोबारा अतिक्रमण न करने की सख्त चेतावनी दी गई नगर निगम अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि यातायात में बाधा उत्पन्न करने वाले तथा सार्वजनिक स्थानों पर किए गए अतिक्रमण के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रहेगा। अतिक्रमणकारियों को चेतावनी दी गई कि दोबारा अतिक्रमण किए जाने पर उनके खिलाफ नियमानुसार कठोर कार्रवाई की जाएगी अभियान के दौरान क्षेत्र में गंदगी फैलाने और प्रतिबंधित प्लास्टिक का इस्तेमाल करने वालों के खिलाफ भी कार्रवाई की गई। इस दौरान 3,000 रुपये का शमन शुल्क वसूल किया गया। नगर निगम ने लोगों से सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखने और सड़क अथवा फुटपाथ पर किसी प्रकार का अतिक्रमण न करने की अपील कीअभियान जोनल अधिकारी जोन-05 विनीत कुमार सिंह के नेतृत्व में चलाया गया। इसमें कर अधीक्षक सभाजीत सिंह, जोनल स्वच्छता अधिकारी प्रीती यादव, राजस्व निरीक्षक पियूष तिवारी, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक प्रमोद गौतम, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक आकांक्षा गोस्वामी, प्रवर्तन दल-296 तथा पुलिस बल शामिल रहा।

जमीन की पैमाइश और सीमांकन में नई तकनीक की रफ्तार

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में जमीन की पैमाइश और सीमांकन की प्रक्रिया अब आधुनिक तकनीक के सहारे तेज, सटीक और डिजिटल बनाई जा रही है। योगी सरकार राजस्व विभाग के कामकाज को आधुनिक बनाने के लिए जीएनएसएस रोवर तकनीक का बड़े स्तर पर इस्तेमाल कर रही है। प्रदेश में उपलब्ध 504 जीएनएसएस रोवर में से 350 रोवर तहसीलों तक पहुंचाए जा चुके हैं और इनके माध्यम से फील्ड सर्वेक्षण का काम शुरू हो गया है। वहीं 143 रोवर 10 शहरी स्थानीय निकायों की नक्शा परियोजनाओं में इस्तेमाल किए जा रहे हैं। हरदोई के चकबंदी प्रशिक्षण केंद्र में दो रोवर लगाए गए हैं, जबकि लेखपाल प्रशिक्षण संस्थानों के लिए खरीदे गए नौ रोवर से सभी प्रशिक्षण पूरे हो चुके हैं। इससे जमीन की पैमाइश पारंपरिक जंजीर और फीते के तरीकों से आगे बढ़कर अधिक वैज्ञानिक, सटीक और डिजिटल व्यवस्था की ओर जा रही है।राजस्व परिषद आयुक्त एवं सचिव कंचन वर्मा ने बताया कि जीएनएसएस रोवर की तैनाती केवल तहसीलों तक सीमित नहीं है। तहसीलों में उपलब्ध कराए गए 350 रोवर से फील्ड सर्वेक्षण किया जा रहा है, जबकि 143 रोवर 10 शहरी स्थानीय निकायों की नक्शा परियोजनाओं में लगाए गए हैं। हरदोई के चकबंदी प्रशिक्षण केंद्र को भी दो रोवर उपलब्ध कराए गए हैं। इसके अलावा लेखपाल प्रशिक्षण संस्थानों के लिए खरीदे गए नौ रोवर का इस्तेमाल प्रशिक्षण में किया गया और सभी प्रशिक्षण पूरे हो चुके हैं। इससे राजस्व विभाग के कर्मचारियों को नई तकनीक के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षित करने की दिशा में भी काम आगे बढ़ा है।उन्होंने बताया कि भूमि की सीमाओं और पैमाइश से जुड़े मामलों के त्वरित निस्तारण के लिए धारा-24 का विशेष महाअभियान एक जुलाई से 15 अगस्त तक चलाया गया था।

आधुनिक समाज में सुख की परिभाषा बदल गई

बुजुर्ग दुखी इसलिए हुए कि उनके जीवन का उद्देश्य ही गायब हो गया था। पहले पिता हर सुबह एक उद्देश्य के साथ उठते थे, पत्नी के लिए चाय बनाते, साथ में अखबार पढ़ते, थैला लेकर बाजार जाते, सब्जियों पर चर्चा करते, मोल-भाव करते। माँ खाने की योजना बनातीं, मसाले जाँचतीं, सबके कपड़े सँभालतीं। ये सिर्फ साधारण घरेलू काम नहीं थे। ये वे अदृश्य भावनात्मक धागे थे जो दो बुजुर्गों को मानसिक रूप से जीवित रखते थे और एक-दूसरे से जोड़ते थे। आधुनिक समाज में सुख की परिभाषा बदल गई है। हम सोचते हैं कि आराम, नौकर-चाकर, ऑनलाइन डिलीवरी और सुविधाओं का ढेर ही जीवन को खुशहाल बना देता है। लेकिन हाल ही में सोशल मीडिया में एक सच्ची घटना शेयर की गई। जिसने इस धारणा को पूरी तरह झूठा साबित कर दिया। यह कहानी सिर्फ एक परिवार की नहीं, बल्कि आज के पूरे समाज का आईना है, जहाँ हम बुजुर्गों को आराम देकर उनसे उनके जीवन का उद्देश्य छीन लेते हैं, और फिर हैरान होते हैं कि घर में शांति क्यों नहीं बची? सोशल मीडिया की पोस्ट के अनुसार कहानी पुणे की है। एक बेटा और बहू लंबे समय तक बड़ी मल्टीनेशनल कंपनियों में काम करते रहे। जिनकी मीटिंग्स, डेडलाइन और भागदौड़ भरी व्यस्त जिंदगी थी। घर का लगभग सारा काम उन्होंने आउटसोर्स कर रखा था। कुछ समय बाद में वे दिल्ली लौटे, अपना व्यवसाय शुरू किया और कई वर्षों के अंतराल के बाद पति के 80 वर्षीय माता-पिता उनके साथ रहने लगे। घर आकर उन्होंने देखा कि बुजुर्ग दंपति का पूरा जीवन छोटी-छोटी जिम्मेदारियों के इर्द-गिर्द घूमता था। सुबह चाय बनाना, अखबार पढ़ना, बाजार जाना, सब्जियों पर मोल-भाव करना, मसालों की चर्चा, रोटियाँ बनाना, कपड़े व्यवस्थित करना आदि, ये सब उनकी दिनचर्या का हिस्सा थे। यह देख बेटा-बहू भावुक हो गए। उन्होंने सोचा, माता-पिता ने जीवनभर हमारे लिए संघर्ष किया। हमें हर सुख सुविधा दी है। अब हमारी बारी है उन्हें आराम देने की। उन्होंने पूरी व्यवस्था बदल दी। एक फुल-टाइम रसोईया रख लिया। ई-कॉमर्स कंपनियों से किराना और अन्य ज़रूरी सामान आने लगा। माँ-बाप के लिए अलग-अलग अटेंडेंट और कार व ड्राइवर का इंतज़ाम किया। अटेंडेंट उनके पैर दबाता, जिस्म पर तेल लगाता, चाय-पानी देता, सैर के लिए ले जाता। बच्चों को लगा कि अब माता-पिता सचमुच सुख का जीवन जिएँगे।

लेकिन कुछ ही महीनों में सब बिखर गया। माँ ने चलना-फिरना और काम करना बंद कर दिया। दिन भर सोती रहतीं, सहायकों की हर बात की शिकायतें करतीं, उन पर पूरी तरह निर्भर हो गईं। फिर अवसाद आया और डिमेंशिया के लक्षण शुरू हो गए। पिता चिड़चिड़े और गुस्सैल हो गए। डिलीवरी वालों से झगड़ते, नौकरों को गालियाँ देते, रसोइए को डाँटते, अटेंडेंट पर चीखते चिल्लाते और दिनभर बेमकसद घूमते और गुस्से में घर लौटते। धीरे-धीरे घर का माहौल जहरीला हो गया। बेटा-बहू हैरान हुए कि उनकी इतनी कोशिशों के बावजूद माँ-बाप का जीवन ऐसा खराब क्यों हो गया? यहीं छिपा था जीवन का गहरा सबक। बुजुर्ग दुखी इसलिए नहीं थे कि उनके जीवन में आराम नहीं था। वे दुखी इसलिए हुए कि उनके जीवन का उद्देश्य ही गायब हो गया था। पहले पिता हर सुबह एक उद्देश्य के साथ उठते थे, पत्नी के लिए चाय बनाते, साथ में अखबार पढ़ते, थैला लेकर बाजार जाते, सब्जियों पर चर्चा करते, मोल-भाव करते। माँ खाने की योजना बनातीं, मसाले जाँचतीं, सबके कपड़े सँभालतीं। ये सिर्फ साधारण घरेलू काम नहीं थे। ये वे अदृश्य भावनात्मक धागे थे जो दो बुजुर्गों को मानसिक रूप से जीवित रखते थे और एक-दूसरे से जोड़ते थे। रसोई सिर्फ रसोई नहीं थी, वह संगति थी। बाजार सिर्फ खरीदारी की जगह नहीं था, वह उपयोगिता का भाव देता था। धनिया-मिर्च पर छोटी-छोटी बहसें सिर्फ बहसें नहीं थीं, वे संवाद थे।

आधुनिक समाज में युवा बुढ़ापे के मायने गलत समझते हैं। वे सोचते हैं कि बुजुर्गों को सिर्फ आराम चाहिए। मनुष्य को सिर्फ आराम नहीं चाहिए। उसे चाहिए उपयोगी होने का भाव, मन को व्यस्त रखने वाला काम, शरीर के लिए गतिविधि और सबसे महत्वपूर्ण, दिल में यह एहसास कि 'मैं अभी भी जरूरी हूँ। मेरा अभी भी घर में कुछ योगदान है।' किसी ने उस युवा दंपति को असामान्य सलाह दी, 'अपने माता-पिता की कुछ सुविधाएँ कम करो।' ये उनके प्रति क्रूरता या उपेक्षा नहीं होगी। इससे उनकी स्टाफ पर अत्यधिक निर्भरता नहीं रहेगी। फुल-टाइम अटेंडेंट हटाओ। कुछ पार्ट टाइम सहायता रखो, लेकिन जिम्मेदारी वापस बुजुर्गों को ही दो। उनके अंदर अपने महत्व का भाव लौटाओ। बेटा माँ से कहने लगा, आप जैसी सब्जी कोई नहीं बना सकता। रोज कम से कम एक सब्जी जरूर बनाइए। बहू ससुर से कहने लगी, आप जो सब्जियाँ लाते हैं, वे हमेशा ताजी होती हैं। धीरे-धीरे पुरानी लय लौटी। बातें शुरू हुईं। अगले दिन की योजनाएँ बनने लगीं। छोटी-छोटी बहसें वापस आईं। चलना-फिरना शुरू हुआ। उद्देश्य लौटा और धीरे-धीरेज खुशी भी लौट आई। यह कहानी आज के भारत के लिए चेतावनी है। हाल के महीनों में वृद्धाश्रमों से आने वाली खबरें दिल दहला देने वाली हैं।

हिन्दी-दिवस: चलना तो गाँधी के 'नक्शे-पा' ही होगा

विदेशी भाषा के तौर पर हिन्दी को पढ़ाने के पाठ्यक्रम की क्या स्थिति है? लंदन से प्रकाशित 'पुरवाई' के संपादक तेजेंद्र शर्मा ने ब्रिटेन में हिन्दी की तथा कथा बताई तो मैं हत्प्रभ रह गया।

डॉ. सुधीर सक्सेना

हर साल हम हिन्दी दिवस मनाते हैं। हर बरस 14 सितंबर को देश-विदेश में स्कूलों कॉलेजों, दफ्तरों, सरकारी उपक्रमों, संस्थानों से लेकर दूतावासों तक में रस्म-अदायगी होती है, हिन्दी की महिमा का स्तवन गान होता है, मर्सिया पढ़ा जाता है, कसमें खाई जाती हैं और मिठाइयां बंटती है। हिन्दी के नाम पर हिन्दी पखवाड़ा मनाने का भी चलन है, लेकिन नतीजा क्या निकलता है? वही ढाक के तीन पात। नौकरशाह हिन्दी की प्रगति के नाम पर टीप दर्ज करते हैः 'बीइंग डन'। विश्व में सर्वाधिक आबादी के मुल्क भारत की राष्ट्रभाषा के लिये संयुक्त राष्ट्र संघ में ठौर नहीं। विज्ञप्तियां अंग्रेजी में जारी होती हैं। जहां-तहां हिन्दी रोमन लिपि में लिखी जाती है। सरीसृप सा रेंगती हिंगलिश चौतरफा फल-फूल रही है। हिन्दी की पत्रिकाएं दम तोड़ चुकी है। हिन्दी के विद्यापीठों और केंद्रीय हिन्दी संस्थान की दशा और दिशा सर्वज्ञात है। विदेशी भाषा के तौर पर हिन्दी को पढ़ाने के पाठ्यक्रम की क्या स्थिति है? लंदन से प्रकाशित 'पुरवाई' के संपादक तेजेंद्र शर्मा ने ब्रिटेन में हिन्दी की तथा कथा बताई तो मैं हत्प्रभ रह गया। उन्होंने बताया कि ब्रिटेन में 1990 के दशक में हिन्दी बतौर ऐच्छिक विषय विषय दसवीं और बारहवीं तक पढ़ाई जाती थी। हिन्दी भाषियों ने करियर के लिए अपने बच्चों को फ्रेंच, जर्मन, स्पेनिश जैसी भाषाएँ सिखायी। फलतः हिन्दी की पढ़ाई बंद करनी पड़ी। फिर आया मातृभाषा फार्मूला। पंजाबी और गुजराती भाषी भारतवंशी बाजी मार ले गये। बंगाली बांग्लादेश की भाषा है और उर्दू पाकिस्तान की लिहाजा बांग्ला स्कूलों में पढ़ाई जाती है, मगर जब हिन्दी किसी की मातृभाषा ही नहीं, तो क्यूं पढ़ाई जाये? तेजेंद्र कहते हैं कि मन प्रसन्न हो जाता है कि विश्व के सौ से अधिक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है, मगर कोई नहीं बताता कि किन देशों के स्कूलों में हिन्दी पढ़ाई जाती है? वह हिन्दी के शिक्षण-प्रशिक्षण से जुड़ी संस्थाओं के डाटा-बेस पर भी सवाल करते हैं। आत्मश्लाघा में डूबी संस्थाओं और उनके स्वयंभू राजदूतों को उनकी जिज्ञासा शांत करनी चाहिये।

हिन्दी दिवस हम 14 सितंबर, 1953 से मना रहे हैं, अलबत्ता हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय सन 1949 में लिया गया था। जानकारी जुटाएं और अपने गिरेबां में भी झांके कि क्या कोई अन्य देश अपना भाषा-दिवस मनाता है और यह भी कि उसके देश में उसकी भाषा की सद्गति है या दुर्गति? अटल बिहारी वाजपेयी को यूएनओ में हिन्दी में बोले आधी सदी बीतने को आयी। उसकी पुनरावृत्ति या वहाँ उसे सूचीबद्ध करने का ठोस उपक्रम क्यों नहीं? इस महादेश में शीर्ष 'महाजन' आज जैसी हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं, उससे सामान्य जन कैसा भाषायी-संस्कार ग्रहण करेगा?

भाषा हमारी अभिव्यक्ति है। हमारी पहचान है। हमारी अस्मिता है। इस बहुलतावादी सामासिक संस्कृति के महादेश में हिन्दी की महत्ता को सबने स्वीकारा। क्या लोकमान्य तिलक, क्या रवीन्द्रनाथ ठाकुर और क्या नेताजी सुभाष बोस। मगर महात्मा गांधी सा हिन्दीव्रती कोई दूसरा न हुआ। गांधी का सारा जीवन स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज का उद्घोष था। वह सन 1915 में दक्षिण अफ्रीका से लौटे और गोखले की प्रेरणा से देश को जानने की मिशन-यात्रा में जुट गये। उनकी मातृभाषा हिन्दी न थी। वह अंग्रेजी संभाषण में कुशल थे। लेकिन उन्होंने हिन्दी अपनायी। हिन्दी में बोले। हिन्दी में लिखा। हिन्दी की अलख जगाई और स्वातंत्र्य वेला में ऐसा भी क्षण आया, जब उन्होंने बीबीसी के संवाददाता से कहा कि जाओ, दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया। बापू का यह कथन अंग्रेजी की अवमानना नहीं, वरन हिन्दी का गौरव गान है।

हिन्दी-दिवस के सूत्रपात से कई दहाई पहले की बात है। सन 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास समारोह। मुख्य अतिथि तत्कालीन वायसराय। सब अंग्रेजी में बोलते हैं, मगर बापू हिन्दी में। वह मातृभाषा में शिक्षा की पैरवी करते हैं। अगले वर्ष सन 1917 में वह भड़ौच में द्वितीय गुजरात शिक्षा सम्मेलन में फिर इसे दोहराते हैं। वह महामना मालवीय के हिन्दी भाषण को स्वर्ण सा दमकता बताते हैं। फिर आता है सन 1918 में इंदौर में अभा हिन्दी साहित्य सम्मेलन का आठवां अधिवेशन। बापू 28 मार्च से 31 मार्च तक इंदौर में। सन 1935 में वह इसी सम्मेलन के बहाने एक बार फिर इंदौर आते हैं। उच्चतर सांस्कृतिक मूल्यों के ध्वजवाहक और कला मर्मज्ञ गाँधी विद्वानों की नीहारिका के समक्षा हिन्दी के व्यवहार और प्रतिष्ठा के लिए जो कहते हैं, वह ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। वह दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए दो लाख रुपयों की शर्त भी लगाते हैं। वह दक्षिण भारत में 18 वर्षों में सघन प्रचार का ब्यौरा देते हैं। मसलन छह लाख जनों का प्रवेश से लेकर 70 लाख किताबों का प्रकाशन और मद्रास में आठ लाख प्रतियों का मुद्रण। हिन्दी की महत्ता, व्यवहार और प्रतिष्ठा को देहाराते हुए वह कहते हैं जिस भाषा को हम राष्ट्रभाषा बनाना चाहते है इसका साहित्य स्वच्छ तेजस्वी और उच्चगामी होना चाहिए। उन्होंने हिन्दी और हिन्दुस्तानी के विवाद पर बहुत सारगर्भित बातें कहीं और विवाद को राष्ट्रीय एकता के लिये हानिकारक कहा।

बापू के कथन के संदर्भ में आंके तो सच क्या है? क्या हिन्दी साहित्य में न्यूनता नहीं है। अंतरराष्ट्रीय मामलों, विज्ञान, पर्यावरण और इतिहास लेखन के लिए क्या हमें अंग्रेजी संदर्भों की शरण नहीं लेनी पड़ती? क्या हम हिन्दी के निर्भीक प्रयोक्ता हैं? गांधी की वैश्विक छवि को हिन्दी और हिन्दी की गौरव-गरिमा और ग्राह्यता को गांधी ने पोसा था। इधर हिन्दी के बहता नीर को बांधने और बांटने की कुचेष्टाएं हो रही हैं, किन्तु हिन्दी की प्रतिष्ठ के लिए गांधी के नक्शे-पा चलना होगा।

व्यंग्य

आर्थिक कदम भी दंत-विहीन

सैन्य विकल्प समाप्त हो जाने के बाद अमेरिका अब आर्थिक दबाव के जरिए वह हासिल करने की कोशिश कर रहा है, जो सैन्य बल से संभव नहीं हुआ। लेकिन आर्थिक कदम भी दंत-विहीन ही हैं।

अमेरिका ने ईरान को दुनिया में पराया बना देने के बड़े इरादे के साथ 'ऑपरेशन इकॉनमिक आउटकास्ट' का एलान किया। अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने धमकी दी कि अब ईरान से किसी भी प्रकार का आर्थिक संबंध रखने वाले देश और कंपनियों को डॉलर सिस्टम से बाहर कर दिया जाएगा। लेकिन जब प्रतिबंधों की सूची जारी की गई, तो ऐसा नहीं लगा कि अमेरिका सचमुच अपने एलान को हकीकत में बदलने में सक्षम है। इसमें भारत की चार कंपनियों सहित लगभग 60 व्यक्तियों, संस्थाओं और कंपनियों को शामिल किया गया, लेकिन चीन की किसी वित्तीय संस्था को निशाना नहीं बनाया गया। इस बारे में पूछने पर बेसेंट ने कहा- वैश्विक वित्तीय प्रणाली को मैं क्यों उड़ा डालना चाहूंगा?

मतलब साफ है। अमेरिका की राय है कि चीनी बैंकों पर प्रतिबंध लगाने से पूरी वित्तीय प्रणाली संकटग्रस्त हो सकती है। जबकि चीन ही ईरान का सबसे बड़ा तेल खरीदार है। वह ईरान में बड़ा निवेशक भी है। अतः चीन को रोके बिना अमेरिकी प्रतिबंध दिखावटी दांत बन कर रह जाएंगे। चीनी विदेश मंत्रालय ने ताजा अमेरिकी प्रतिबंध को यह कहते हुए ठुकरा दिया है कि यह अंतरराष्ट्रीय कानून एवं संयुक्त राष्ट्र के दायरे से बाहर है। उसने कहा कि चीन अपने हितों की मजबूती से रक्षा करेगा। तो फिर अमेरिकी प्रतिबंध से कौन प्रभावित होगा? रूस पहले से ही सबसे अत्यधिक प्रतिबंधित देश है, इसलिए उस पर नई पाबंदियों का नगण्य असर होना है। दरअसल, प्रतिबंधों की घोषणा के बाद रूस ने ईरान से 25 बिलियन डॉलर का परमाणु समझौता करने का एलान कर दिया। ऐसे में स्पष्ट है कि अमेरिकी कदम का दबाव सिर्फ खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका/ इजराइल के कुछ सहयोगी देश ही महसूस करेंगे, जो ईरान के लिए किसी गंभीर चिंता का विषय नहीं है। इसीलिए विश्लेषकों ये राय जताई है कि ऑपरेशन इकॉनमिक आउटकास्ट असल में यह स्वीकारोक्ति है कि अमेरिका के पास सैन्य विकल्प समाप्त हो चुके हैं। इसलिए अमेरिका अब आर्थिक दबाव के जरिए वह हासिल करने की कोशिश कर रहा है, जो सैन्य बल से संभव नहीं हुआ। लेकिन आर्थिक कदम भी दंत-विहीन ही हैं।

ब्लॉग

मध्यप्रदेश हिन्दी में एमबीबीएस की पढ़ाई प्रारंभ करने वाला देश का पहला राज्य

विश्वास कैलाश सारंग

।(आरएनएस)।स्टीफन स्पेंडर की तरह कहें तो सर्जना के स्तर पर भाषा, अपनी भाषा एक आध्यात्मिक गतिविधि है या टाल्सटाय के शब्दों में यहाँ आध्यात्मिक सक्रियता के स्त्रोत प्रवाहित होते हैं या मुक्तिबोध के शब्दों में 'स्व' से ऊपर उठना, अन्य के मर्म में प्रवेश करना मनुष्यता का सबसे बड़ा लक्षण है। और यह लक्षण हिन्दी में शब्द बनते ही दिखाई देने लगता है। आकार, अक्षर और ध्वनि का एकाकार जिस भाषा में हुआ वह सिर्फ हिन्दी है।

इसलिए मैं गिलक्राइस्ट जैसे लोगों का सख्त विरोधी हूं जो हिन्दी को गंवारू और हिन्दुओं की भाषा कहता था। 'गार्सा-द-तासी' ने लिखा था हिन्दी में हिन्दू धर्म का आभास है। इसलिए यदि हिन्दी के लोकवृत्त को समझना हो तो भक्ति आंदोलन को समझना जरुरी है। जब कबीर कहते हैं 'कबीरा खड़ा बाज़ार में, लिए लुकाठी हाथ' तो वो बाजार का नहीं उसकी माया का विरोध कर रहे हैं या विद्यापति की उम्मीद 'बिपत अपत तरु पाओल रे पुन नव नव पात'। यह हिन्दी का संदेश है कि जो पत्ते सूख गए हैं तो उनमें फिर नए पत्ते आएंगे। हमारे देश में उदारवाद के पगचिन्ह भक्तिकाल में साफ-साफ दिखाई देते हैं। आखिर मथुरा में आचार्य वल्लभ पहुंचे, चैतन्य पहुंचे और इन सभी ने सामुदायिक खाइयों को पाटने का काम किया।

हिन्दी की पाचनशक्ति अद्भुत है। इसमें दुनियाभर की भाषाओं के शब्द हैं और वे अतिथि शब्द नहीं है बल्कि आत्मसात कर लिए गए शब्द हैं। ऐसा दुनिया की कोई भाषा नहीं कर सकी। अंग्रेजी भी नहीं जिसकी सर्वाधिक डुग्गी हमारे देश में पीटी जाती है। अंग्रेजी से पहले वहाँ लैटिन और ग्रीक बोली जाती थी यही अभिजात्य वर्ग की भाषा थी। अंग्रेजी उस समय अभिजात्यों की नहीं हाशिए पर जी रहे गरीबों और मजदूरों की भाषा थी। उनके शब्द लिए गए मगर अंग्रेजी उन्हें आत्मसात नहीं कर पायी। जैसे जॉन कीट्स की एक कविता का शीर्षक है ₹ला बेले डेम सैंस मर्सी₹ यानि एक दयाहीन सुंदर महिला यह शीर्षक 15वीं शताब्दी का है। अंग्रेजी में यह कविता बेहद चर्चित है, जिसमें एक परी शूरवीर को सम्मोहित करके अप्रिय भाग्य का श्राप देती है। हिंदी सिर्फ एक भाषा ही नहीं भारत की संस्कृति है। यह उदार और निर्माणात्मक में सुन भर लीजिए तो हिन्दी स्मृति में बसने लगती है।

हमारे यशस्वी और श्रद्धेय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की पंक्तियां है- ₹आसमान में सिर उठाकर, घने बादलों को चीरकर, रोशनी का संकल्प लें, अभी तो सूरज उगा है। दृढ़ निश्चय के साथ चलकर, हर मुश्किल को पार कर,घोर अंधेरे को मिटाने, अभी तो सूरज उगा है।'

आज सूरदास कोलंबिया में, मीरा अमेरिका के कई बड़े विश्वविद्यालयों में पढ़ाई जा रही हैं। जायसी पढ़ाए जा रहे हैं। हिन्दी का अर्थ ही नहीं शब्द-शब्द श्लोक है। जो बोलते ही सूखे गेहूँ के दाने सा खनकता है। हिन्दी के निकट बैठकर महात्मा गांधी दिखाई देने लगते हैं अर्थात हर गरीब मन का दर्द जहां नव गीत में ढ़लने लगे वह हमारी भाषा है हिंदी।

देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का निरंतर प्रयास रहा है कि भारत की शिक्षा व्यवस्था भारतीय भाषाओं, भारतीय ज्ञान परंपरा और भारतीय प्रतिभा की शक्ति के अनुरूप आगे बढ़े। लंबे समय तक अंग्रेजी को उच्च शिक्षा और विशेषकर चिकित्सा एवं तकनीकी शिक्षा का प्रमुख माध्यम माना जाता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि ग्रामीण, गरीब, किसान और सामान्य परिवारों से आने वाले अनेक प्रतिभाशाली विद्यार्थियों के लिए उच्च स्तरीय शिक्षा तक पहुंच का मार्ग अपेक्षाकृत कठिन बना रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने शिक्षा में भारतीय भाषाओं के महत्व को नई दिशा दी। यह केवल भाषा परिवर्तन का विषय नहीं है बल्कि यह शिक्षा को अधिक समावेशी, सहज और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की व्यापक सोच का हिस्सा बना।

प्रधानमंत्री जी के इसी संकल्प को धरातल पर उतारते हुए मध्यप्रदेश ने चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल की। मुझे इस बात का गर्व है कि चिकित्सा शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य करते हुए हम मध्यप्रदेश का नाम उस ऐतिहासिक उपलब्धि से जोड़ने में सफल रहे, जब मध्यप्रदेश ने हिन्दी माध्यम में एमबीबीएस की पढ़ाई प्रारंभ करने वाला देश का पहला राज्य होने का गौरव हासिल किया। यह केवल मध्यप्रदेश के लिए उपलब्धि नहीं थी बल्कि भारतीय भाषाओं के प्रति विश्वास को मजबूत करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम था।

16 अक्टूबर 2022 वो ऐतिहासिक दिन जब भोपाल के लाल परेड ग्राउंड में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के करकमलों द्वारा एमबीबीएस प्रथम वर्ष की हिन्दी पुस्तकों का विमोचन किया गया और हिंदी में मेडिकल शिक्षा के नए अध्याय का शुभारंभ हुआ। यह क्षण इसलिए भी ऐतिहासिक था क्योंकि पहली बार चिकित्सा जैसे अत्यंत तकनीकी और विशेषज्ञता वाले विषय में भारतीय भाषा को शिक्षा के प्रभावी माध्यम के रूप में बड़े स्तर पर स्थापित करने का प्रयास किया गया।

हमारा उद्देश्य कभी यह नहीं रहा कि हिन्दी को अंग्रेजी के विरोध में खड़ा किया जाए। उद्देश्य यह है कि भाषा किसी विद्यार्थी की प्रतिभा के मार्ग में बाधा न बने। रोजमर्रा की जिंदगी में जिस भाषा में विद्यार्थी सोचता है, परिवार से संवाद करता है और अपने अनुभवों को समझता है, उसी भाषा में कठिन अवधारणाओं को समझना उसके लिए स्वाभाविक रूप से अधिक सहज हो सकता है।

हिन्दी में एमबीबीएस का पाठ्यक्रम तैयार करना सामान्य अनुवाद का कार्य नहीं था। चिकित्सा विज्ञान की शब्दावली, अवधारणाओं और तकनीकी विषयों को विद्यार्थियों के लिए वैज्ञानिक रूप से सही, सहज और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करना एक बड़ी चुनौती थी। इसी उद्देश्य से चिकित्सा शिक्षा विभाग के अंतर्गत हिन्दी में एमबीबीएस पाठ्यक्रम तैयार करने के लिए पृथक हिन्दी पाठ्यक्रम प्रकोष्ठ का गठन किया गया तथा विशेषज्ञों की उच्च स्तरीय टास्क फोर्स के माध्यम से कार्ययोजना तैयार की गई। चिकित्सा क्षेत्र के विशेषज्ञों की सहभागिता से पाठ्यक्रम और पुस्तकों को चरणबद्ध एवं व्यवस्थित रूप से तैयार करने का कार्य किया गया।

हिन्दी पुस्तकों के रूपांतरण और चिकित्सा शिक्षा की इस पूरी प्रक्रिया को संस्थागत स्वरूप देने के लिए हिन्दी चिकित्सा प्रकोष्ठ 'मंदार' का विधिवत गठन किया गया। जिस प्रकार समुद्र मंथन से अमृत प्राप्त हुआ था, उसी प्रकार ज्ञान के मंथन, विशेषज्ञों के परिश्रम और संकल्प की साधना से 'मंदार' के माध्यम से चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में एक नया अमृत निकला। महीनों के अथक परिश्रम, विशेषज्ञों के ज्ञान और मिशन मोड में किए गए कार्य के परिणामस्वरूप एमबीबीएस की पुस्तकों और पाठ्यक्रम को हिन्दी में उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई।

हिन्दी में चिकित्सा शिक्षा की शुरुआत केवल प्रथम वर्ष तक सीमित नहीं रही। प्रथम वर्ष की पुस्तकों के विमोचन के बाद हिन्दी चिकित्सा प्रकोष्ठ 'मंदार' में एमबीबीएस द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ वर्ष की पुस्तकों के लिप्यंतरण एवं पाठ्यक्रम संबंधी कार्य को भी आगे बढ़ाया गया। यह क्रम बताता है कि मध्यप्रदेश की पहल किसी प्रतीकात्मक कार्यक्रम तक सीमित नहीं थी। इसके पीछे एक व्यापक और दीर्घकालिक दृष्टि थी चिकित्सा शिक्षा को भारतीय भाषाओं में अधिक सुलभ बनाना।

मध्यप्रदेश की इस पहल के बाद छत्तीसगढ़, राजस्थान, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों ने भी हिन्दी में एमबीबीएस शिक्षा की दिशा में पहल की। हिन्दी में एमबीबीएस भारतीय भाषाओं के लिए एक सकारात्मक राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत साबित हुई। आज देश के अन्य राज्य भी अपनी हिन्दी में चिकित्सा शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए मध्यप्रदेश से मार्गदर्शन ले रहे हैं। यह मध्यप्रदेश के लिए गौरव की बात है कि प्रदेश ने इस दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई।

हिन्दी में एमबीबीएस की शुरुआत मेरे सार्वजनिक जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक है। यह मेरे लिए उस संकल्प की जीत है जिसमें गांव के बच्चे, गरीब परिवार के बच्चे और सामान्य पृष्ठभूमि से आने वाला विद्यार्थी भी डॉक्टर बनने का सपना पूरे आत्मविश्वास के साथ देख सके। आज जब हम राष्ट्रीय हिन्दी दिवस मना रहे हैं, तब हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं को केवल बोलचाल तक सीमित नहीं रखा जाएगा। उन्हें ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान, चिकित्सा, तकनीक और नवाचार की भाषाओं के रूप में भी निरंतर सशक्त बनाया जाएगा।

मेरी भाषा, आपकी, हमारी और इस देश की भाषा अनहद राग है। इसकी संवेदना की गहराई और पवित्रता गैरिक वसना है। जैसे कबीर ने कहा है कि "पिंजर प्रेम प्रकासिया, अंतरि भया उजास। मुखि कस्तूरी महमही, बाणी फूटी बास" अर्थात जब इस शरीर रूपी पिंजरे में प्रभु-प्रेम का दीपक जलता है, तो हृदय के भीतर का अंधकार मिट जाता है और पूरा अंतःकरण प्रकाशमान हो जाता है। इस दिव्य प्रेम के प्रभाव से साधक का मुख कस्तूरी की तरह महकने लगता है यानि उसके मुख और वाणी से केवल ईश्वर के नाम और प्रेम की सुगंध (पवित्र विचार) ही चारों तरफ बिखरने लगती है। आप सभी हिन्दी प्रेमियों और देशवासियों को राष्ट्रीय हिन्दी दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

लेखक मध्यप्रदेश के खेल एवं सहकारिता मंत्री हैं।

'मौसमी नेताओं से सावधान रहें', विनोद साहनी हत्याकांड के बीच संजय निषाद का मुकेश साहनी पर वार

आर्यावर्त संवाददाता

गोंडा। गोंडा में निषाद समाज केकारोबारी विनोद कुमार साहनी की हत्या को लेकर उत्तर प्रदेश में सियासत तेज हो गई है। इस मामले को लेकर निषाद समाज के नेताओं के बीच भी जुबानी जंग शुरू हो गई है। बिहार के नेता और विकासशील इंसान पार्टी (VIP) के अध्यक्ष मुकेश साहनी भी विरोध जता रहे हैं। इस बीच निषाद पार्टी अध्यक्ष और यूपी में मंत्री संजय निषाद ने निशान साधा है।

यूपी सरकार में मत्स्य मंत्री संजय निषाद ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए मछुआरा समाज से मौसमी नेताओं से सावधान रहने की अपील की। उन्होंने मुकेश सहनी पर हमला करते कहा कि आजादी के बाद पहली बार यूपी में मछुआरा समुदाय राजनीतिक ताकत बनकर खड़ा हुआ है। चुनाव का मौसम शुरू हो चुका है और ऐसे समय में बाहर से आने वालेनेताओं से समाज को सतर्क रहने की जरूरत है।

संजय निषाद ने अपने एक्स पोस्ट में मुकेश सहनी पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा, 'मौसमी नेता अब तक तय नहीं कर पाए हैं कि वे बंबई में व्यापार करेंगे, यहां वहां घूमकर दूसरों की दरी बिछाएंगे या मछुआरा समाज के वोटों की दलाली ही करते रहेंगे, जैसे अभी अपने राज्य में किया। उन्होंने मुकेश सहनी को यूपी के निषाद समाज को गुमराह करने की राजनीति करने वाला करारा दिया। उन्होंने कहा, 'जो बिहार में मछुआरा समुदाय के वोटों की खरीद-बिक्री के लिए बदनाम रहा हो- बिहार में मछुआरों के राजनीतिक उभार को ग्रहण लगा चुका हो, जो एक विधानसभा चुनाव तक जीतने की हैसियत नहीं रखता हो- वह जेब में नोटों की गड्डी रखके लाल टोपी, नीली वर्दी पहनकर यूपी के निषाद समाज को गुमराह करने की राजनीति करने निकला है।'

'मछुआरा समुदाय पैसों पर बिकने वाली कौम नहीं'

यूपी सरकार में NDA के सहयोगी संजय निषाद ने कहा किमछुआरा समुदाय पैसों पर बिकने वाली कौम नहीं है। यूपी के मछुआरों को राजनीति सिखाने से पहले यह जानना आवश्यक है कि राजनीति उनके खून में है।मछुआरा गरीब भले ही हैं लेकिन गद्दार पुत्र नहीं है। अंग्रेजों मुगलों से लड़ने वाला है, उन्हें मौत का घाट उतारने वाला, देश को आजाद करने वाला, संविधान लिखवाने वाला है।

उन्होंने आगे कहा, 'मछुआरा समाज संविधान में आरक्षण भी लिखवाने वाला है। कुछ ना समझ लोगों की वजह से आरक्षण लूट गया और लूट रहा है। समाज को एक नहीं होने दे रहे है। यह केवट मल्लाह बिंद कश्यप में भेद कर रहे है। जो भी दूसरे दलों से पैसा लेकर समाज में पैसा देगा बिकाऊ पीआऊ का लेबल लगि रहा है सही मायने में गद्दार पुत्र है।'

मुकेश सहनी के निर्देश पर लखनऊ में कैंडल मार्च

विनोद साहनी हत्याकांड के विरोध में VIP पार्टी के कार्यकर्ताओं ने लखनऊ में कैंडल मार्च निकाला। गांधी प्रतिमा से सरदार पटेल प्रतिमा तक निकाले गए मार्च में कार्यकर्ताओं ने आरोपियों को कड़ी से कड़ी सजा देने और विनोद साहनी के परिवार को आर्थिक मदद देने की मांग की। मुकेश सहनी भी विनोद को अपने पार्टी का कार्यकर्ता बता रहे हैं और आरोपियों की एनकाउंटर की मांग कर रहे हैं।

वहीं, डॉ. संजय निषाद उसे अपने पार्टी का जिला प्रचारक बता रहे हैं। उन्होंने 10 सितंबर को विनोद साहनी की मौत के बाद पोस्टमार्टम हाउस पहुंचे और धरने पर भी बैठे थे। 11 सितंबर को विनोद का शव गोंडा पहुंचने के बाद मंत्री जिला मुख्यालय स्थित सर्किट हाउस में धरने पर बैठे। उन्होंने विनोद को न्याय दिलाने की मांग की। साथ ही बताया कि सरकार मामले में गंभीरता के कार्रवाई कर रही है।

दुकान से लौटते समय चाकूओं से ताबड़तोड़ हमला

गोंडा जिले के परसपुर थाना क्षेत्र में बर्तन व्यवसायी विनोद कुमार साहनी की 9 सितंबर 2026 की रात निर्मम हत्या कर दी गई थी। वह शाहपुर धनोवा इलाके में बर्तन की दुकान चलाते थे। 9 सितंबर 2026 की रात करीब 10:30 बजे जब वह दुकान बंद कर घर लौट रहे थे, तब रास्ते में कार सवार कुछ दबंगों ने उन्हें रोका और ताबड़तोड़ चाकूओं से हमला कर दिया विनोद हमले के बाद वही जमीन पर पड़े थे। सूचना पर पुलिस ने गंभीर हालत में उन्हें इलाज के लिए नजदीकी अस्पताल पहुंचाया, जहां से डॉक्टरों ने विनोद को KGMU रेफर कर दिया। KGMU में इलाज के दौरान विनोद की मौत हो गई। पुलिस ने मामले में अबतकमुख्य आरोपी शुभम सिंह समेत कुल चार लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

अनियंत्रित कार ने बाइक सवार को मारी टक्कर, मौत

कुड़वार/सुल्तानपुर। लखनऊ वाराणसी हाईवे पर तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। दुर्घटना में बाइक सवार की मौके पर मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने विधिक कार्यवाही की। सोमवार को लखनऊ से सुल्तानपुर की तरफ आ रही कार ने गलत दिशा में मुसाफिर खाना की तरफ जा रहे बाइक सवार फिरोज (32) पुत्र अली मोहम्मद निवासी खौदिया मुसाफिरखाना जनपद अमेठी को लखनऊ वाराणसी हाईवे पर बधुआ कला थाना क्षेत्र के पढ़वापुर मोड़ के पास टक्कर मार दी। दुर्घटना में बाइक सवार युवक की मौके पर मौत हो गई। तथा कार व बाइक के परखच्चे उड़ गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा करके पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मृतक युवक के दो छोटे छोटे बच्चे है। पत्नी सहित परिजनो का रो रो कर बुरा हाल है। थानाध्यक्ष बंधुआ कला प्रमोद कुमार पटेल ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने के बाद दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को हिरासत में लेकर विधिक कार्यवाही की जा रही है।

संक्षेप

अवैध कच्ची शराब के खिलाफ आबकारी विभाग की कार्रवाई, 104 लीटर शराब बरामद

सुल्तानपुर। आबकारी आयुक्त के निर्देश पर चलाए जा रहे विशेष प्रवर्तन अभियान के तहत सोमवार को आबकारी विभाग की टीम ने जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में छापेमारी कर अवैध कच्ची शराब के कारोबार के खिलाफ कार्रवाई की। अभियान के दौरान छह अभियोग पंजीकृत किए गए तथा करीब 104 लीटर अवैध कच्ची शराब बरामद की गई। जिला आबकारी अधिकारी एवं सहायक आबकारी आयुक्त प्रवर्तन अयोध्या के मार्गदर्शन में आबकारी निरीक्षक रण विजय सिंह, अरुण कुमार, इंद्रपाल तथा सरोज वर्मा के नेतृत्व में टीम ने कोतवाली देहात थाना क्षेत्र के ग्राम कमनगढ़ और गोसाईंगंज थाना क्षेत्र के टाटियानगर में दबिश दी। कार्रवाई के दौरान मौके से करीब 850 किलोग्राम लहन बरामद कर नष्ट कराया गया। विभागीय टीम ने ग्रामीणों को अवैध शराब के सेवन एवं निर्माण से होने वाले स्वास्थ्य और सामाजिक नुकसान के प्रति जागरूक भी किया। आबकारी विभाग ने अवैध शराब के निर्माण एवं बिक्री के खिलाफ अभियान आगे भी जारी रखने की बात कही है।

सिविल डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ की मंडल कार्यकारिणी गठित

सुलतानपुर। सिविल डिप्लोमा इंजीनियर्स संघ, सिंचाई विभाग उत्तर प्रदेश का मंडल अधिवेशन शनिवार को पं. राम नरेश त्रिपाठी सभागार में आयोजित किया गया। अधिवेशन की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष अयोध्या ईं. शोभित कुमार ने की। कार्यक्रम का संचालन ईं. केकेओ सिंह चौहान तथा संयोजन वरिष्ठ उपाध्यक्ष ईं. शिवपूजन ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रांतीय अध्यक्ष ईं. जितेंद्र श्रीवास्तव सहित संघ के पदाधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलन एवं महापुरुषों के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया। अधिवेशन में संगठन की विभिन्न गतिविधियों, कर्मचारियों की समस्याओं तथा संगठन को मजबूत करने सहित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई। पुरानी कार्यकारिणी को भंग कर नई कार्यकारिणी के गठन की प्रक्रिया पूरी की गई। ईं. श्रवण कुमार, प्रांतीय उपाध्यक्ष को निर्वाचन अधिकारी तथा ईं. हंसराज, मंडल अध्यक्ष देवीपाटन मंडल को सहायक निर्वाचन अधिकारी घोषित किया गया। चुनाव उपरांत नई मंडल कार्यकारिणी का गठन किया गया। नई कार्यकारिणी में ईं. योगेश कुमार को मंडल अध्यक्ष, ईं. मनोज कुमार गुप्ता को मंडल उपमहासचिव, ईं. एन. राम को मंडल वरिष्ठ उपाध्यक्ष, ईं. आशीष कुमार यादव को मंडल उपाध्यक्ष, ईं. नीरज कुमार वर्मा को मंडल संगठन सचिव, ईं. अनिल श्रीवास्तव को मंडल वित्त सचिव तथा ईं. आदर्श कुमार गुप्ता को मंडल प्रचार सचिव चुना गया। ईं. विजय शर्मा को लेखा समीक्षक की जिम्मेदारी सौंपी गई। अधिवेशन में मंडलीय एवं जनपदीय संगठन के पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहे। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों ने संगठन की मजबूती तथा कर्मचारियों की समस्याओं के निराकरण के लिए प्रभावी ढंग से कार्य करने का संकल्प लिया।

ज्वाइंट कमिश्नर ने परखी जमीनी हकीकत

जौनपुर। विकास खण्ड रामपुर के ग्रामसभा पट्टी कीरत राय स्थित बनवासी बस्ती में अटल आवासीय योजना के तहत कराए जा रहे कार्यों का ज्वाइंट कमिश्नर ग्राम विकास हिमाली मिश्रा ने स्थलीय निरीक्षण किया। उनके गांव में पहुंचते ही संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सक्रियता देखने को मिली।ज्वाइंट कमिश्नर ने बस्ती में पहुंचकर योजना से जुड़े कार्यों की एक-एक बारीकी को मौके पर परखा और निर्माण एवं व्यवस्थाओं की स्थिति की गहनता से जांच की। उन्होंने लाभार्थियों से भी जानकारी ली और यह जानने का प्रयास किया कि योजना का लाभ पात्र परिवारों तक किस प्रकार पहुंच रहा है। निरीक्षण के दौरान महिलाओं के साथ बैठक कर सीधे संवाद किया। उन्होंने महिलाओं से उनकी समस्याओं, सुविधाओं तथा योजना से संबंधित अनुभवों की जानकारी ली और आवश्यक बिंदुओं पर अधिकारियों को निर्देशित किया।उन्होंने संबंधित अधिकारियों को योजना के कार्यों में गुणवत्ता, पारदर्शिता और समयबद्धता बनाए रखने पर विशेष जोर दिया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने योजना से संबंधित विभिन्न बिंदुओं की जानकारी भी ज्वाइंट कमिश्नर को दी। खंड विकास अधिकारी अभिनव सरोज, ए डी ओ पंचायत आकाश यादव,एडीओ आरडी अरुण यादव, बड़े बाबू उमाशंकर, ग्राम पंचायत सचिव दीपक सरोज, विजय द्विवेदी सहित विकास खण्ड के समस्त सचिव मौजूद रहे।

सशस्त्र सेना बल के जवान की गोली लगने से मौत

आर्यावर्त संवाददाता

कुड़वार/सुल्तानपुर। शाम को बेटे से बात करके सोए पिता को क्या पता था कि उसे सुबह सो कर उठते ही बेटे की मौत हो जाने की खबर मिलेगी। जवान बेटे की मौत से पिता की आँखें नम है। पिता की पथराई आंखे बेटे के अंतिम दर्शन को आतुर है। मामला स्थानीय थाना क्षेत्र के नेवरा खादर बसंतपुर गांव से जुड़ा है। गांव निवासी बलराम तिवारी के सबसे छोटे पुत्र आनंद प्रकाश तिवारी(33) सशस्त्र सीमा बल में हवलदार के पद पर छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के कुहचे अंतागढ़ में 28 वीं वाहिनी एसएसबी में तैनात है। पिता के अनुसार रविवार देर शाम उनकी बेटे से बात हुई थी। सोमवार भोर में पिता के पास फोन आया कि सुबह 05.20 पर आनंद की गोली लगने से मौत हो गई। अचानक मिली सूचना से पिता अवाक हो गए।काफी देर तक तो उन्हें घटना पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। लेकिन अन्य विभागीय अधिकारियों से बात होने के बाद उनका मन मानने को तैयार हुआ। बता दे कि बलराम तिवारी के तीन पुत्र रवि प्रकाश तिवारी, वेद प्रकाश तिवारी व आनंद प्रकाश तिवारी थे। सबसे छोटे बेटे आनंद लगभग 15 वर्ष पहले सशस्त्र सीमा सुरक्षा बल में देश सेवा करने चले गए। पिछले करीब 02 वर्षों से आनंद छत्तीसगढ़ प्रांत के कांकेर जिले के अंतागढ़ में तैनात थे। इनकी पत्नी प्रियंका तिवारी इकलौते बेटे अनुभव तिवारी (16) के साथ चंडीगढ़ में निजी मकान में रहती है जो 11 वी का छात्र है।घटना से परिवार में कोहराम मचा हुआ है।वृद्ध मां राजेश्वरी देवी सहित परिजनो का रो रो कर बुरा हाल है। आनंद के पिता ने बताया कि बेटे के कमांडेट द्वारा जानकारी दी गई है कि रात 08 बजे उनका पार्थिव शरीर फ्लाइट से लखनऊ एयरपोर्ट पहुंचेगा।जहां से सीधे घर के लिए रवाना होगा। प्रभारी निरीक्षक प्रवीण कुमार यादव ने बताया कि सशस्त्र सेना बल के जवान की मौत की सूचना परिजनो द्वारा दी गई।अभी तक विभागीय कोई सूचना नहीं मिली है।

मां सीढ़ी से नीचे गिर गई हैं... महिला ने पहले गला रेतकर की सास की हत्या, फिर पति को सुनाई झुठी कहानी

आर्यावर्त संवाददाता

बिजनौर। यूपी के बिजनौर में थाना धामपुर क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव करनावाला से रिश्तों को शर्मसार कर देने वाली एक सनसनीखेज वारदात सामने आई है। यहां एक बहू ने अपनी ही सास की धारदार हथियार से गला रेतकर बेरहमी से हत्या कर दी। वारदात को छुपाने के लिए आरोपी बहू ने सास के सीढ़ियों (जीने) से गिरने की झूठी कहानी भी रची, लेकिन पुलिस की मुस्तैदी और परिजनों के संदेह के आगे उसकी चालाकी धरी की धरी रह गई।

पुलिस ने आरोपी महिला को हिरासत में ले लिया है। मृतका के बेटे कमल के अनुसार, वह रोज की तरह दोपहर का खाना खाने के बाद अपने काम पर चला गया था। घर पर उसकी मां और पत्नी प्रीति अकेले थे। तीनों बच्चे ट्यूशन गये हुए थे। शाम के समय अचानक कमल के मोबाइल पर उसकी पत्नी प्रीति का फोन आया। प्रीति ने घबराते हुए कमल को बताया कि उसकी मां सीढ़ी से नीचे गिर गई हैं और उन्हें गंभीर चोटें आई हैं।

पड़ोसियों के मुताबिक, खाना बनाने को लेकर सास और बहू में कहासुनी हुई थी। वहीं मां के सीढ़ियों से गिरने की खबर सुनते ही कमल आनन-फानन में अपने घर पहुंचा। घर के अंदर का नजारा देखकर उसके होश उड़ गए। मां जमीन पर लहुलूहान हालत में मृत पड़ी थीं और उनके शरीर पर चोटों के गहरे निशान थे। कमल को अपनी पत्नी की बातों पर शक हुआ, जिसके बाद उसने तुरंत अपने चाचा को मौके पर बुला लिया।

जब परिजनों ने प्रीति से कड़ाई से पूछताछ शुरू की, तो वह लगातार बयान बदलकर उन्हें गुमराह करने लगी। हद तो तब हो गई जब पकड़े जाने के डर से आरोपी प्रीति ने परिजनों के साथ ही मारपीट शुरू कर दी। ग्रामीणों की सूचना पर थाना धामपुर पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची। पुलिस की सख्त पूछताछ के सामने आरोपी बहू प्रीति ज्यादा देर तक टिक नहीं सकी।

इस पूरे मामले में पुलिस ने क्या बताया?

पति कमल का आरोप है कि प्रीति ने उसकी मां की धारदार हथियार से गला रेत दिया, जिससे उनकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस के सामने प्रीति ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। धामपुर पुलिस उपाधीक्षक अंजनी कुमार ने बताया कि सास- बहु में अक्सर कहासुनी हो जाने की वजह से आवेश में आकर बहु ने यह कृत्य किया है। मृतका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया गया है। धामपुर पुलिस उपाधीक्षक ने बताया कि आरोपी बहू प्रीति को हिरासत में ले लिया गया है और हत्या में इस्तेमाल किए गए हथियार की बरामदगी के प्रयास किए जा रहे हैं। पुलिस मामले की गहराई से जांच कर रही है कि इस हत्याकांड के पीछे की असली वजह क्या थी। इस घटना के बाद से पूरे करनावाला गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है।

मन्नत पूरी नहीं हुई तो नोएडा के पंडित को बहाने से जौनपुर बुलाया, फिर किया किडनैप... मांगी रंगदारी

आर्यावर्त संवाददाता

नोएडा। आस्था के नाम पर कराई गई पूजा से मनोकामना पूरी नहीं हुई तो आरोपियों ने भगवान से नाराज होने के बजाय पूजा करने वाले पंडित को ही अपना निशाना बना लिया। नोएडा के पंडित अनिल तिवारी के अपहरण और एक लाख रुपये की रंगदारी मांगने का सनसनीखेज मामला सामने आया है। आरोप है कि जौनपुर के रहने वाले आशीष और प्रवेश ने पहले पंडित से धार्मिक अनुष्ठान कराया और जब उनकी कथित मनोकामना पूरी नहीं हुई तो उन्हें दोबारा पूजा के बहाने जौनपुर बुलाकर बंधक बना लिया।

जानकारी के मुताबिक आरोपियों ने कुछ समय पहले अनिल तिवारी से धार्मिक अनुष्ठान कराया था, जिसके बाद जब उनकी उम्मीद के मुताबिक परिणाम नहीं मिला तो उन्होंने पूजा के खर्च में पैसों को वापस लेने का फैसला किया। इसी बहाने पंडित को दोबारा जौनपुर बुलाया गया। जौनपुर पहुंचने के बाद उन्होंने कमरे में पीड़ित को बंधक बना लिया।

इसके बाद पंडित को छोड़ने के बदले आरोपियों ने परिजनों से एक लाख रुपये की रंगदारी मांगी और रकम नहीं देने पर जान से मारने की धमकी दी। पुलिस के मुताबिक 2 सितंबर को परिजनों ने थाने में इस मामले की शिकायत दर्ज कराई। इस मामले में पुलिस के सामने चुनौती सिर्फ पंडित को सुरक्षित बरामद करने की नहीं थी, बल्कि आरोपियों तक पहुंचकर पूरी साजिश को पर्दाफाश करने की भी थी।

पुलिस ने ऐसे आरोपियों को पकड़ा

पुलिस की दो टीमों ने आरोपियों की हर गतिविधियों पर नजर रखी और जाल बिछाया। फिर जैसे ही आरोपी रंगदारी की रकम लेने पहुंचे पुलिस ने सर्फाबाद के पास से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान पूरे घटनाक्रम की परते खुल गईं। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि अपहरण की साजिश में आरोपियों के साथ और लोग शामिल हैं या नहीं। थाना प्रभारी सेक्टर-113 प्रमोद कुमार ने बताया कि प्रारंभिक जांच में आरोपियों ने बताया कि पूजा में खर्च किए गए पैसे वापस लेने के नाम पर दोनों आरोपियों ने पंडित को किडनैप करने का ये कदम उठाया।

जनगणना-2027 में ओबीसी कॉलम जोड़ने की मांग

आर्यावर्त संवाददाता

सुलतानपुर। जनगणना-2027 के फॉर्म में अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए अलग कॉलम जोड़ने तथा केंद्र व राज्यों में सूचीबद्ध जातियों की ड्रॉपडाउन सूची प्रगणकों को उपलब्ध कराने की मांग को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। ज्ञापन में कहा गया है कि लोकसभा चुनाव-2024 के दौरान ओबीसी वर्ग की जातिगत जनगणना कराने का वादा किया गया था, लेकिन 14 अगस्त 2026 को जारी जनगणना अधिसूचना में ओबीसी के लिए अलग कॉलम नहीं जोड़ा गया। साथ ही जातियों की पूर्व निर्धारित सूची उपलब्ध कराने के बजाय जाति की जानकारी दर्ज करने के लिए ओपन-एंडेड व्यवस्था अपनाई गई है। कांग्रेस नेताओं का आरोप है कि इस व्यवस्था से जातियों की गणना में एकरूपता प्रभावित हो सकती है और ओबीसी समेत वंचित वर्गों की वास्तविक आबादी का सही आंकड़ा सामने नहीं आ पाएगा। इससे इन वर्गों की शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति के आकलन तथा आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व से जुड़ी नीतियों के निर्धारण में भी कठिनाई होगी। ज्ञापन में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी द्वारा इस मुद्दे को लेकर केंद्र सरकार के समक्ष उठाई गई मांगों का भी उल्लेख किया गया। कांग्रेस ने मांग की कि जनगणना-2027 में ओबीसी के लिए स्पष्ट कॉलम जोड़ा जाए तथा केंद्र और राज्यों की सूची में शामिल जातियों की ड्रॉपडाउन सूची प्रगणकों को उपलब्ध कराई जाए। कांग्रेस ने राष्ट्रपति से मामले में हस्तक्षेप कर ओबीसी वर्ग की सही जातिगत जनसंख्या सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक कदम उठाने की मांग की है।

यूपी चुनाव में भाजपा के सामने सबसे बड़ा खतरा कौन? अंदरूनी रिपोर्ट ने बढ़ाई टेंशन

आर्यावर्त संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव अब करीब छह महीने दूर हैं। 2027 में लगातार तीसरी बार सत्ता में वापसी के लिए बीजेपी ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। बीजेपी संगठन के बड़े नेताओं के लगातार यूपी दौरे और बैठकों का दौर चल रहा है। हाल ही में संगठन महासचिव बीएल संतोष और प्रदेश प्रभारी विनोद तावड़े की अगुवाई में बैक-टू-बैक बैठकें हुईं, लेकिन इन बैठकों से जो फीडबैक निकलकर सामने आया है... उसने बीजेपी की टेंशन बढ़ा दी है।

सूत्रों के मुताबिक, बीजेपी नेतृत्व को लग रहा है कि यूपी का चुनाव इस बार धर्म के बजाय जाति के मुद्दे की तरफ बढ़ रहा है और अगर चुनाव पूरी तरह जातीय समीकरणों के इर्द-गिर्द चला गया तो बीजेपी को नुकसान हो सकता है। कार्यकर्ताओं की नाराजगी, विधायकों के खिलाफ एंटी-इनकंबेंसी, नई संगठनात्मक टीम को लेकर सवाल, सोशल मीडिया पर विपक्ष की बढ़त और युवाओं-बेरोजगारी का मुद्दा... इन तमाम पहलुओं पर बीजेपी के अंदर मंथन हुआ है।

कार्यकर्ताओं की नाराजगी भी बनी चिंता

बीजेपी के लिए सबसे अहम उसका संगठन और बूथ स्तर का कार्यकर्ता है, लेकिन सूत्रों के मुताबिक बैठक में कार्यकर्ताओं की नाराजगी को लेकर भी फीडबैक मिला। शिकायत है कि कार्यकर्ताओं को सम्मान नहीं मिल रहा... उनकी बातों की सुनवाई नहीं हो रही। 2024 लोकसभा चुनाव के दौरान भी बीजेपी को लेकर कार्यकर्ताओं की नाराजगी की चर्चा सामने आई थी। अब 2027 से पहले संगठन नहीं चाहता कि वही स्थिति दोबारा पैदा हो।

विधायकों से नाराजगी कितनी बड़ी?

एक और बड़ा फीडबैक बीजेपी विधायकों को लेकर सामने आया है। सूत्रों के मुताबिक कई इलाकों में स्थानीय विधायकों के खिलाफ नाराजगी है और इसका असर ग्राउंड पर भी दिखाई दे रहा है। यानी बीजेपी को सिर्फ विपक्ष से नहीं बल्कि अपने ही विधायकों के खिलाफ संभावित एंटी-इनकंबेंसी से भी निपटना होगा। बताया जा रहा है कि बीजेपी ने एक सर्वे भी कराया है, जिसमें उसके 100 से अधिक विधायकों के खिलाफ भयंकर एंटी-इनकंबेंसी है।

नई टीम पर भी सवाल

संगठन की नई टीम को लेकर भी अंदरखाने सवाल उठाए गए हैं। सूत्रों के मुताबिक चुनाव को देखते हुए संगठन में जो नए चेहरे आए हैं। उनमें से कुछ को लेकर ग्राउंड पर बहुत सकारात्मक फीडबैक नहीं है। कुछ नियुक्तियों को लेकर सिफारिश और चयन प्रक्रिया पर भी सवाल उठने की बात सामने आई है। हालांकि बीजेपी नेतृत्व की कोशिश यही है कि नई टीम को चुनावी मिशन में पूरी तरह सक्रिय किया जाए, क्योंकि चुनाव करीब है और प्रयोग के लिए वक्त बहुत कम बचा है।

बीजेपी खुद को कहां देख रही है?

अंदरखाने की सबसे चौंकाने वाली बात ये है कि सूत्रों के मुताबिक बीजेपी इस समय चुनाव को एकतरफा बढ़त वाला मुकाबला नहीं मान रही। बल्कि संगठन के स्तर पर फीडबैक है कि मुकाबला फिलहाल बराबरी का दिखाई दे रहा है। यानी बीजेपी खुद को न बहुत आगे मान रही है... न बहुत पीछे, लेकिन यही बराबरी बीजेपी के लिए खतरे की घंटी है, क्योंकि अगले छह महीनों में अगर विपक्ष ने अपना नैरेटिव मजबूत कर लिया तो मुकाबला और कड़ा हो सकता है।

सोशल मीडिया बना बड़ा मोर्चा

बीजेपी के सामने एक और बड़ी चुनौती सोशल मीडिया को लेकर है। सूत्रों के मुताबिक पार्टी और सरकार को मिलकर विपक्ष के सोशल मीडिया नैरेटिव का जवाब देना होगा, क्योंकि आज चुनाव सिर्फ रैलियों और पोस्टरों से नहीं लड़ा जाता बल्कि मोबाइल स्क्रीन पर भी लड़ा जाता है। विपक्ष अगर सोशल मीडिया पर नैरेटिव सेट करने में आगे निकल गया तो उसका असर युवाओं और पहली बार वोट देने वाले मतदाताओं तक पहुंच सकता है। पार्टी आलाकमान ने मीडिया टीम को अटैकिंग मोड में रहने को कहा है।

युवाओं और बेरोजगारी पर भी फोकस

युवाओं और रोजगार का मुद्दा भी बीजेपी की रणनीति के केंद्र में है। सूत्रों के मुताबिक सरकार को इस मोर्चे पर कुछ सकारात्मक बदलाव और ठोस संदेश देने की जरूरत महसूस की जा रही है, क्योंकि यूपी में बड़ी युवा आबादी है और चुनाव में बेरोजगारी, रोजगार और प्रतियोगी परीक्षाओं जैसे मुद्दे विपक्ष के लिए बड़ा हथियार बन सकते हैं। बीजेपी चाहती है कि चुनावी मैदान में जाने से पहले इन मुद्दों पर सरकार की उपलब्धियां और आगे की योजना दोनों साफ दिखाई दें।

BSP के आंतरिक कलह को लेकर भी टेंशन

हाल के दिनों में बहुजन समाज पार्टी (बसपा) के अंदर जो चल रहा है, उसने बीजेपी की टेंशन बढ़ा दी है। दरअसल आंकड़े बताते हैं कि जैसे ही बसपा का ग्राफ नीचे जाता है, उसका फायदा बीजेपी से ज्यादा सपा-कांग्रेस को होता है। 2024 के चुनाव में बसपा का वोट प्रतिशत दहाई का आंकड़ा नहीं पार कर पाया और इसका नुकसान बीजेपी को उठाना पड़ा। ऐसे में बीजेपी के अंदर दलित वोटों को अपने पाले में लाने के साथ ही उसके बिखराव को लेकर मंथन चल रहा है।

BL संतोष के तीन दिन... और बढ़ी हलचल

बीएल संतोष का यूपी दौरा इसी लिहाज से बेहद अहम माना जा रहा है। तीन दिनों तक संगठन के नेताओं और पदाधिकारियों के साथ बैठकें, ग्राउंड फीडबैक, कार्यकर्ताओं की स्थिति, विधायकों का प्रदर्शन और चुनावी तैयारी... हर मुद्दे पर चर्चा हुई। सूत्रों के मुताबिक इस दौरे के बाद बीएल संतोष यूपी की मौजूदा स्थिति की पूरी रिपोर्ट केंद्रीय नेतृत्व को सौंप सकते हैं और उसके बाद बीजेपी में आगे की चुनावी रणनीति पर मंथन शुरू हो सकता है।

'सबको मिलकर चुनाव लड़ना होगा'

इन बैठकों के बाद बीएल संतोष ने संगठन को एकजुट होकर चुनाव लड़ने का संदेश दिया। उनका फोकस साफ है कि संगठन और सरकार के बीच बेहतर तालमेल, कार्यकर्ताओं की सक्रियता और सामूहिक रूप से चुनावी मैदान में उतरन... क्योंकि बीजेपी के लिए 2027 सिर्फ एक और चुनाव नहीं है... बल्कि यूपी में लगातार तीसरी सरकार बनाने की

अक्सर महसूस होता है जैसे शरीर में ताकत ही नहीं? एनर्जी ड्रिंक्स नहीं, इन चीजों से मिलेगा लाभ

शरीर को बेहतर तरीके से काम करते रहने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिसका प्रमुख स्रोत है भोजन। यदि आपका भोजन पौष्टिक, विटामिन्स-मिनरल्स से भरपूर नहीं है तो आपको अक्सर थकान-कमजोरी महसूस होते रह सकती है। इसके अलावा कुछ स्थितियों में कई अंतर्निहित स्वास्थ्य समस्याएं जैसे एनिमिया, डायबिटीज के कारण भी लो एनर्जी की दिक्कत बनी रह सकती है। इन सबसे बचाव के लिए जरूरी है कि आप आहार की गुणवत्ता और पौष्टिकता में सुधार करें।

थकान-कमजोरी को दूर करने के लिए कुछ लोग एनर्जी ड्रिंक्स का सेवन करते हैं, पर डॉक्टर्स का कहना है कि इस प्रकार के पेय असल में सेहत के लिए बहुत नुकसानदायक हो सकते हैं। एनर्जी ड्रिक्स की बजाय उन चीजों का सेवन किया जाना चाहिए, जो न सिर्फ आपको तुरंत ऊर्जा प्रदान करें साथ ही शरीर को कोई नुकसान भी न होने पाए।

पहले जानिए, एनर्जी ड्रिंक्स क्यों नुकसानदायक हैं?

अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्सबर्ग के शोधकर्ताओं ने अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर बताया कि एनर्जी ड्रिंक्स में कैफीन और अन्य उत्तेजक पदार्थों का मिश्रण होता है, ये आपको कुछ समय के लिए तुरंत एनर्जी तो देते हैं पर ये पेय समग्र स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा कर सकते हैं। इनमें कैफीन और ऐडेड शुगर की अधिक मात्रा होती है। कुछ में ग्वाराना, टॉरिन और एल-कार्निटाइन जैसे तत्व भी होते हैं, जो आपकी हृदय गति और तनाव के स्तर में वृद्धि कर सकते हैं। अधिक मात्रा में कैफीन का सेवन करने से चिंता, बेचैनी और सोने में परेशानी हो सकती है।

संयमित मात्रा में करें कॉफी का सेवन

कॉफी का सेवन करना सेहत के लिए लाभकारी हो सकता है। भले ही इसमें भी कैफीन की मात्रा होती है पर अगर संयमित मात्रा में कॉफी पीते हैं तो इससे कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ का भी जिक्र मिलता है। यह न सिर्फ आपकी ऊर्जा को बढ़ाता है साथ ही ब्लड प्रेशर को कम रखने में भी इसके लाभ हैं। अध्ययनों में कॉफी के सेवन को डिमेंशिया और डायबिटीज की दिक्कतों को भी कम करने वाला पाया गया है पर इसकी अधिकता नुकसानदायक हो सकती है।

डार्क चॉकलेट के कई फायदे

डार्क चॉकलेट, एनर्जी बूस्ट करने का अच्छा विकल्प हो सकता है। मूड और मस्तिष्क के कामकाज में सुधार करने के साथ इसमें मौजूद कोकोआ एंटीऑक्सीडेंट, कोशिकाओं की रक्षा करने, रक्तचाप कम करने और मस्तिष्क में रक्त प्रवाह में सुधार करने में मदद कर सकती है। स्ट्रेस-एंग्जाइटी वाले लोगों में भी डार्क चॉकलेट के सेवन से लक्षणों को कम होने में विशेष लाभ देखा गया है।

अंडे और चिकन को बनाएं आहार का हिस्सा

अक्सर थकान-कमजोरी महसूस करते रहते हैं तो इससे छुटकारा पाने का बेहतर तरीका है कि आप आहार में अंडे और चिकन को शामिल करें। अकेले अंडे में 70 कैलोरी और 6 ग्राम तक प्रोटीन होता है। यह शरीर को ऊर्जावान रखने का बेहतर तरीका हो सकता है। इसी तरह चिकन को लीन प्रोटीन का अच्छा स्रोत माना जाता है। चिकन में अन्य मांसों की तुलना में सेचुरेटेड फैट की मात्रा कम होती है, जो इसे सेहत के लिए लाभकारी बनाती है।

सुबह की यह एक गलती पूरे सेहत के लिए बहुत हानिकारक, हृदय रोगों– डायबिटीज का बढ़ सकता है जोखिम

हमारे शरीर को स्वस्थ और फिट रखने के लिए नियमित रूप से पौष्टिक आहार की आवश्यकता होती है। आहार की पौष्टिकता के साथ समय पर भोजन करना भी आवश्यक माना जाता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, ज्यादातर लोगों में आहार से संबंधित एक समस्या देखी जा रही है वह है- सुबह नाश्ता न करना। यह एक गलत आदत आपमें कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ाने वाली हो सकती है। सुबह नाश्ता न करने वाले लोगों में हृदय रोगों से लेकर, टाइप-2 डायबिटीज जैसी गंभीर समस्याओं के विकसित होने की आशंका जताई गई है।

आहार विशेषज्ञ कहते हैं, हमारे दिन के पूरे भोजन में सुबह का नाश्ता सबसे महत्वपूर्ण होता है। रात के 6-8 घंटे पेट खाली होने के बाद शरीर को ऊर्जा के लिए पौष्टिक आहार की जरूरत होती है। यह मेटाबॉलिक प्रक्रियाओं के लिए भी आवश्यक है। नाश्ता न कर पाने की आदत आपके लिए कई प्रकार की समस्याओं को बढ़ाने वाली हो सकती है।

सुबह का नाश्ता क्यों जरूरी है?

कई अध्ययनों से पता चलता है कि सुबह भरपेट पौष्टिक नाश्ता करने वाले लोगों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है। शोधकर्ताओं ने पाया कि ऐसे लोगों में अधिक वजन/मोटापे की आशंका कम होने के साथ कई क्रोनिक बीमारियों का खतरा भी कम होता है।

रिपोर्ट में प्रमुख आहार विशेषज्ञ मैरी साबत कहती हैं, यदि आप नाश्ता छोड़ देते हैं, तो यह आदत दूसरे मील में अधिक खाने की संभावना बढ़ाने वाली हो सकती है, जिससे शरीर में अतिरिक्त कैलोरी की आवश्यकता हो सकती है। इस आदत के कारण इंसुलिन स्पाइक्स भी हो सकता है जिससे डायबिटीज और शरीर में फैट बढ़ने का जोखिम रहता है।

हृदय रोगों की समस्याएं

जामा जर्नल में प्रकाशित एक अध्ययन के अनुसार, जो लोग सुबह का नाश्ता नहीं करते हैं, उनमें अन्य लोगों की तुलना में दिल का दौरा पड़ने की आशंका लगभग 27% अधिक होती है। शोध का नेतृत्व करने वाली डॉ. लिआ काहिल बताती हैं कि जोखिम की दर इतनी चिंताजनक नहीं है, लेकिन वह इस तथ्य का भी समर्थन करती हैं कि स्वस्थ नाश्ता करने से वास्तव में दिल के दौरे का खतरा कम हो सकता है।

टाइप-2 डायबिटीज का खतरा

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ पब्लिक हेल्थ ने एक अध्ययन किया जिसका उद्देश्य खाने की आदतों और स्वास्थ्य के बीच संबंध को समझना था। करीब छह साल तक चले इस शोध में 46,289 महिलाओं ने हिस्सा लिया। अध्ययन के परिणाम आश्चर्यजनक थे। परिणाम के अनुसार, जिन महिलाओं को नाश्ता नहीं करने की आदत थी, उनमें टाइप-2 मधुमेह होने का खतरा उन महिलाओं की तुलना में अधिक था, जो रोजाना नाश्ता करती थीं। इंसुलिन स्पाइक और अधिक वजन को इसका कारण माना गया।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ?

आहार विशेषज्ञों का कहना है, सुबह के नाश्ते को 'दिन का सबसे महत्वपूर्ण भोजन' कहा जाता है। यह आपके ऊर्जा स्तर और सतर्कता को बढ़ावा देने के साथ आपके ग्लूकोज की आपूर्ति की भरपाई करता है, साथ ही बेहतर स्वास्थ्य के लिए आवश्यक पोषक तत्व भी प्रदान करता है। सुबह का नाश्ता पौष्टिक और स्वस्थ होना चाहिए, इसमें फलों-सलाद, दूध जैसी चीजों को शामिल करें जिससे शरीर के लिए आवश्यक तत्वों की पूर्ति की जा सके।

थ्रेडिंग या वैक्सिंग, कैसे दें आईब्रो को सही शेप? जानें कौन सा तरीका रहता है बेहतर

आज-कल की लड़कियां बेहद कम उम्र में ही अपने लुक्स को लेकर काफी सोचने लगती हैं। उन्हें लगता है कि वो हमेशा परफेक्ट दिखनी चाहिए। यही वजह है कि कम उम्र में ही लड़कियां वैक्सिंग और थ्रेडिंग कराने लगती हैं। इस वजह से उनकी मम्मियों को काफी टेंशन होने लगती है कि आखिर कम उम्र में उनके लिए क्या सही रहेगा। आज के लेख में हम आपको वैक्सिंग और थ्रेडिंग में क्या बेहतर है, इस बारे में बताने जा रहे हैं। स्किन पर वैक्सिंग और थ्रेडिंग दोनों का ही अलग असर होता है।

ऐसे में आपके लिए सबसे पहले ये जानना बेहद जरूरी है कि थ्रेडिंग और वैक्सिंग में आखिर फर्क है क्या ? अगर आपको इस फर्क के बारे में ही नहीं पता होगा तो इसका असर आपकी बेटी की स्किन पर होगा। ना सिर्फ आपकी बेटी बल्कि इस बारे में आपको खुद के लिए भी पता होना चाहिए कि अगर आप आईब्रो सेट करा रही हैं तो थ्रेडिंग बेहतर है या फिर वैक्सिंग। आइए देर ना करते हुए आपको दोनों तरीकों के बारे में डिटेल में बताते हैं।

कैसे होती है वैक्सिंग

अगर आईब्रो वैक्सिंग की बात करें तो इसके लिए सबसे पहले एक फ्लैट चाकू (जिसमें धार नहीं होती) की सहायता से वैक्स लेकर आईब्रो के आप पास लगाई जाती है। वैक्स लगाते वक्त आईब्रो की शेप का खास ध्यान रखा जाता है। वैक्स लगाने के बाद वैक्सिंग स्ट्रेप को लगाकर खींचा जाता है और बाल आसानी से हट जाते हैं।

इसके फायदे और नुकसान

अगर इसके फायदे की बात करें तो इस प्रक्रिया से आईब्रो को आसानी से शेप दे दी जाती है। अगर आपकी आईब्रो मोटी है तो ये एक बेहतर ऑप्शन है। वहीं अगर बात करें इसके नुकसान की तो अगर आपकी त्वचा सेंसिटिव है तो स्किन पर गर्म वैक्स की वजह से दाने और खुजली की समस्या सामने आ सकती है। कई बार तो त्वचा जल भी जाती है।

कैसे होती है थ्रेडिंग

अगर आपकी आईब्रो पतली है तो ये इसे शेप देने का अच्छा ऑप्शन है। इसमें धागे की सहायता से आईब्रो को शेप देते हुए आस-पास से बालों को हटाया जाता है। थ्रेडिंग के बाद स्किन पर क्रीम लगाना भी बेहद जरूरी होता है।

इसके फायदे और नुकसान

अगर बात करें इसके फायदे की तो हर बार नए धागे का इस्तेमाल किया जाता है, ऐसे में स्किन से जुड़ी एलर्जी होने की संभावना ना के बराबर हो जाती है। कई बार स्किन लाल हो जाती है, लेकिन ये हाल ही में नॉर्मल भी हो जाती है वहीं अगर इसके नुकसान की बात करें तो अगर ये सही तरीके से नहीं की गई तो स्किन पर धागे से कट लग सकता है।

कौन सी प्रक्रिया है बेहतर ?

अगर आप इस संशय में हैं कि कौन सी प्रक्रिया आपके लिए बेहतर है तो अपने स्किन टाइप और उसकी जरूरत को देखते हुए इसका चयन कर सकती हैं। अगर हमारी सलाह की बात करें तो अत्यधिक मोटी आइब्रो से छुटकारा पाने के लिए वैक्सिंग ही कराएं, वहीं अगर आईब्रो की ग्रोथ कम है तो थ्रेडिंग बेहतर विकल्प है।

वैज्ञानिकों ने किया अलर्ट : फ्रेंच फ्राइज– समोसे के शौकीन हैं? ये कहीं आपको डिप्रेशन का शिकार न बना दे

फ्रेंच फ्राइज, समोसे-पकौड़े खाने के शौकीन हैं? तो आपके लिए बुरी खबर है। आपकी यह एक आदत सिर्फ मोटापे को बढ़ाने के लिए ही नुकसानदायक नहीं है, इससे मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं को भी बढ़ते हुए देखा गया है। शोधकर्ता तो यहां तक कहते हैं कि जो लोग अक्सर डीप फ्राइड चीजें खाते हैं, खासकर आलू को फ्राई करके बनी फ्रेंच फ्राइज या पकौड़े जैसी चीजें, उनमें अन्य लोगों की तुलना में स्ट्रेस-डिप्रेशन होने का खतरा अधिक हो सकता है।

तली हुई चीजों को अब तक के अध्ययनो में मोटापा-कोलेस्ट्रॉल बढ़ाने वाला माना जाता रहा है, हालांकि इस अध्ययन में वैज्ञानिकों ने बताया कि इस तरह के आहार मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहे हैं। समय के साथ ऐसे लोगों में स्टेस-एंग्जाइटी होने और गंभीर स्थितियों में डिप्रेशन का जोखिम बढ़ जाता है।

तली हुई चीजें हानिकारक

तली हुई चीजें शरीर के लिए किस प्रकार से नुकसानदायक हो सकती हैं, इसको समझने के लिए शोधकर्ताओं ने अध्ययन किया जिसके परिणाम पीएनएएस जर्नल में प्रकाशित हुए हैं। इस शोध में एक दशक से अधिक समय तक करीब डेढ़ लाख लोगों के डेटा का मूल्यांकन किया। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि जिन लोगों ने अधिक तली हुई चीजें खाईं, लगातार तले हुए भोजन का सेवन करते रहे, उनमें चिंता विकार होना का जोखिम 12 फीसदी और अवसाद विकसित होने का जोखिम 7 प्रतिशत अधिक पा या गया।

क्यों नुकसानदायक हैं तली हुई चीजें?

लेखकों ने पाया कि तले हुए खाद्य पदार्थों में एक्रिलामाइड नामक एक रसायन होता है जो मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता हुआ देखा गया है। जब खाद्य पदार्थों को बहुत अधिक तापमान पर पकाया जाता है, तो यह कैमिकल रिलीज होता है। अध्ययन के चरणों में पाया गया कि एक्रिलामाइड, समय के साथ मस्तिष्क की सूजन को बढ़ावा देता है, जिसके कारण व्यवहार में परिवर्तन और इससे संबंधित दिक्कतें होने लगती हैं। अध्ययनकर्ताओं ने बताया कि आलू और अन्य खाद्य पदार्थ जब ज्यादा खस्ता और भूरे होने लगते हैं तो भी एक्रिलामाइड निर्मित होता है। भुनी हुई कॉफी बीन्स में भी यह पाया गया है। इसका मतलब है कि एक्रिलामाइड आलू के चिप्स के क्रंच में, फ्रेंच फ्राइज में और टोस्टेड स्नैक्स में भी हो सकता है। ऐसे चीजों का सेवन कम से कम किया जाना चाहिए।

क्या कहते हैं अध्ययनकर्ता?

वास्तव में एक्रिलामाइड न्यूरोटॉक्सिन के रूप में कार्य करता है और मस्तिष्क के किसी भी क्षेत्र में ऑक्सीडेटिव और इंफ्लामेटरी डैमेज का कारण बन सकता है। कुछ शोध में यह भी बताया गया है कि एक्रिलामाइड सेंट्रल और पेरिफेरल नर्वल सिस्टम में न्यूरोडीजेनेरेशन और न्यूरोट्रांसमिशन से संबंधित समस्याओं को भी बढ़ा सकता है। अध्ययन के लेखक और प्रिवेंटिव एंड लाइफस्टाइल मेडिसिन विशेषज्ञ डेविड काट्ज कहते हैं, इस अध्ययन से पता चलता है कि तले हुए भोजन के अधिक सेवन से चिंता/ अवसाद का खतरा बढ़ जाता है। हालांकि जिन लोगों को पहले से ही मानसिक स्वास्थ्य विकार हैं इसका उनपर कैसा असर होता है, यह जानने के शोध किया जाना है। सभी लोगों को ऐसी चीजों के सेवन को कम करने पर ध्यान देना चाहिए।

कामकाजी महिलाओं ने जीवन बीमा खरीदने में पुरुषों को पछाड़ा, वित्तीय सुरक्षा को लेकर पुरुष अब भी आगे

जीवन बीमा खरीदने में कामकाजी महिलाएं भले ही पुरुषों से आगे हों लेकिन वित्तीय सुरक्षा को लेकर अभी पुरुषों की स्थिति महिलाओं से अच्छी है। शहरी इलाकों में पुरुष 46 अंकों के साथ वित्तीय सुरक्षा में अग्रणी हैं और यह शहरी भारत के 45 अंकों के समग्र औसत से अधिक है। शहरी भारत की महिलाएं अपने परिवार को किसी भी परेशानी से बचाने के लिए ज्यादा प्रतिबद्ध दिखाई देती हैं।

पहली बार जीवन बीमा खरीदने में कामकाजी महिलाओं ने पुरुषों को पीछे छोड़ दिया है। 79 प्रतिशत कामकाजी महिलाओं के पास जहां जीवन बीमा पॉलिसी है वहीं 76 प्रतिशत कामकाजी पुरुषों के पास इस तरह की पॉलिसी हैं। मैक्स लाइफ द्वारा दिए गए एक सर्वे में कहा गया है कि यह बदलाव महिलाओं में वित्तीय तैयारियों और जिम्मेदारियों को दर्शाता है।

जीवन बीमा खरीदने में कामकाजी महिलाएं भले ही पुरुषों से आगे हों, लेकिन वित्तीय सुरक्षा को लेकर अभी पुरुषों की स्थिति महिलाओं से अच्छी है। शहरी इलाकों में पुरुष 46 अंकों के साथ वित्तीय सुरक्षा में अग्रणी हैं और यह शहरी भारत के 45 अंकों के समग्र औसत से अधिक है। सर्वे में इस बात का भी पता लगा कि शहरी भारत में पुरुषों और महिलाओं के बीच वित्तीय सुरक्षा का अंतर मुख्य रूप से जीवन बीमा जागरूकता के स्तर में भारी असमानता की वजह से है।

सर्वे में शहरी भारत की महिलाएं अपने परिवार को किसी भी परेशानी से बचाने के लिए ज्यादा प्रतिबद्ध दिखाई देती हैं और यही वजह है कि जीवन बीमा पॉलिसी खरीदने में वे पुरुषों की तुलना में बहुत ज्यादा पीछे नहीं दिखाई देती हैं। वहीं पॉलिसी बाजार के एक सर्वे के मुताबिक चालू वित्त वर्ष में 25 लाख रुपये से अधिक कवरेज वाली हेल्थ पॉलिसी को खरीदने वाली महिलाओं की संख्या बढ़कर 24 प्रतिशत हो गई है। जो वित्त वर्ष 2022-23 में 15 प्रतिशत थी। वहीं 25 लाख रुपये से कम कवरेज वाली हेल्थ पॉलिसी लेनी वाली महिलाओं की संख्या सात प्रतिशत घटी है।

महिलाओं ने शुरू किए 8,000 स्टार्टअप, जुटाई 23 अरब डालर की फंडिंग

देश में 8,000 से अधिक स्टार्टटप ऐसे हैं, जिनकी संस्थापक महिलाएं हैं और ये अब तक 23 अरब डालर की फंडिंग जुटा चुके हैं। मार्केट इंटेलिजेंस प्लेटफार्म ट्रैक्सन की रिपोर्ट के मुताबिक, तकनीक से जुड़े स्टार्टअप को शुरू करने वाली महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी 18 प्रतिशत से अधिक है जबकि वित्त पोषित कंपनियों के स्टार्टअप में महिला उद्यमियों की हिस्सेदारी 14 प्रतिशत से अधिक है। महिलाओं द्वारा शुरू किए गए स्टार्टअप की संख्या के मामले में दिल्ली-एनसीआर अग्रणी है जबकि उसके बेंगलुरु और मुंबई का नंबर आता है। महिलाओं द्वारा शुरू किए गए 2,000 से अधिक स्टार्टअप को अब तक फंडिंग मिली है और लगभग 6,000 ऐसे स्टार्टअप हैं, जिन्हें अभी फंडिंग नहीं मिली है। इनमें से 590 स्टार्टअप का राजस्व 30,000 डालर से अधिक है। देश में महिलाओं द्वारा शुरू किए गए स्टार्टअप द्वारा जुटाई गई फंडिंग की हिस्सेदारी पिछले एक दशक में बढ़ी है।

महिला स्वामित्व ववाले एमएसएमई ने ज्यादा महिलाओं को काम पर रखा

महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई ने पुरुष स्वामित्व वाले एमएसएमई की तुलना में 11 प्रतिशत अधिक महिला कर्मचारियों को काम पर रखा। किनारा कैपिटल द्वारा किए गए विश्लेषण से यह पता चलता है कि महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई द्वारा पैदा की गईं नौकरियों में से एक तिहाई महिला कर्मचारियों के लिए थीं। किनारा कैपिटल की संस्थापक और सीईओ हार्दिका शाह ने कहा, "महिला उद्यमियों ने अपने व्यावसायिक ऋणों की ना केवल बेहतर तरीके से अदायगी की बल्कि अपनी आय में भी बढ़ोतरी की।" महिला स्वामित्व वाले एमएसएमई ने अपनी कंपनी के मासिक राजस्व में 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। महिलाओं के स्वामित्व वाले एमएसएमई ने जहां मासिक शुद्ध आय में 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है वहीं पुरुषों के स्वामित्व वाले एमएसएमई ने 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की है।

कर्ज अदायगी की बात करें तो जहां केवल 3.4 प्रतिशत महिला उद्यमियों ने ऋण चुकाने में चूक की, वहीं पुरुषों के बीच यह दर 4.6 प्रतिशत से अधिक थी। अध्ययन में छह राज्यों आंध्र प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, महाराष्ट्र, तमिलनाडु और तेलंगाना और केंद्र शासित प्रदेश पुडुचेरी के 44,821 एमएसएमई के डाटा का विश्लेषण किया गया।

जोमैटो ने कैश ऑन डिलीवरी पर शुरू किया अतिरिक्त शुल्क, ग्राहकों से 5 से 20 रुपए तक वसूले जाएंगे

ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म जोमैटो ने अब कैश ऑन डिलीवरी (सीओडी) विकल्प चुनने वाले ग्राहकों से 5 रुपए से 20 रुपए तक का अतिरिक्त शुल्क लेना शुरू कर दिया है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा और राजस्व स्रोतों को मजबूत करने की रणनीति के तहत कंपनी अब ऑर्डर के दौरान भुगतान के तरीके से भी कमाई करने की दिशा में कदम बढ़ा रही है।

कंपनी के ऐप पर दिखाई देने वाले बिल विवरण के अनुसार, पे ऑन डिलीवरी फीस नाम से यह शुल्क अलग से जोड़ा जा रहा है। यह शुल्क केवल उन ग्राहकों पर लागू हो रहा है जो ऑनलाइन भुगतान के बजाय डिलीवरी के समय नकद भुगतान का विकल्प चुनते हैं।

विभिन्न रिपोर्ट्स के अनुसार, अधिकांश मामलों में यह शुल्क 5 रुपए है, हालांकि कुछ ऑर्डरों में ग्राहकों से 7 रुपए और कुछ मामलों में 20 रुपए तक भी वसूले गए हैं। यह नया शुल्क जोमैटो के पहले से लागू प्लेटफॉर्म शुल्क, रेस्तरां द्वारा लिए जाने वाले पैकेजिंग शुल्क और जीएसटी से अलग है। यानी कैश ऑन डिलीवरी विकल्प चुनने वाले ग्राहकों को अब कुल बिल में एक अतिरिक्त राशि भी चुकानी पड़ेगी।

वहीं, ऑनलाइन भुगतान करने वाले ग्राहकों से यह शुल्क नहीं लिया जा रहा है। जोमैटो प्रतिदिन लगभग 23 लाख से 25 लाख फूड ऑर्डर प्रोसेस करता है। ऐसे समय में जब रैपिडो का फूड डिलीवरी ब्रांड ओनली तेजी से बाजार में अपनी मौजूदगी बढ़ा रहा है और फ्लिपकार्ट भी अपने ईट इन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म का परीक्षण कर रहा है, जोमैटो नए राजस्व स्रोतों की तलाश में है।

गौरतलब है कि फूड डिलीवरी कंपनियों ने वर्ष 2023 में पहली बार प्लेटफॉर्म फीस लगानी शुरू की थी। शुरुआत स्विगी ने 2 रुपए प्रति ऑर्डर शुल्क से की थी, जिसके बाद जोमैटो ने भी इसी तरह का शुल्क लागू किया। बाद में कंपनी ने प्लेटफॉर्म फीस को लगातार बढ़ाया और इस वर्ष इसे 12.50 रुपए से बढ़ाकर 14.99 रुपए प्रति ऑर्डर कर दिया। इस पर जीएसटी अलग से लिया जाता है।

वर्तमान ऑर्डर वॉल्यूम को देखते हुए शुल्क में मामूली वृद्धि भी कंपनी के लिए सालाना आधार पर सैकड़ों करोड़ रुपए की अतिरिक्त आय का स्रोत बन सकती है। इस बीच, जोमैटो हाल के महीनों में लागत नियंत्रण और परिचालन पुनर्गठन पर भी काम कर रही है।

अगस्त में आई एक रिपोर्ट के अनुसार, कंपनी ने अपने संगठनात्मक ढांचे की समीक्षा के बाद लगभग 250 कर्मचारियों की छंटनी की थी। इसी प्रक्रिया के तहत कंपनी ने हैदराबाद स्थित कस्टमर डिलाइट ऑपरेशंस को बंद करने और अपनी शेष इन-हाउस ग्राहक सहायता गतिविधियों को गुरुग्राम में एकीकृत करने का फैसला लिया था।

होर्मुज के नए शिपिंग रूट पर ईरान-ओमान की बैठक टली, बातचीत की नई तारीख तय नहीं

ईरान-ओमान की होर्मुज बैठक जहाज पर हमले के बाद टाल दी गई

तेहरान, एजेंसी। ईरान और ओमान के बीच होर्मुज स्ट्रेट से जुड़े नए शिपिंग रूट पर होने वाली बैठक रविवार को टाल दी गई। केशम द्वीप के पास एक ईरानी कार्गो शिप पर हुए हमले के बाद यह फैसला लिया गया। इस बैठक में ईरान के साथ खाड़ी के दूसरे देशों को भी शामिल होना था। अभी बैठक की नई तारीख तय नहीं हुई है। ईरान के विदेश मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि कुछ क्षेत्रीय देशों के अनुरोध पर तेहरान और मस्कट ने मिलकर बैठक टालने का फैसला किया। ईरान अब ओमान के साथ बातचीत करके नई तारीख तय करेगा।

ईरान और ओमान ने हाल में होर्मुज स्ट्रेट से आने-जाने के लिए नए

शिपिंग रूट पर सहमति बनाई थी। तस्नीम न्यूज एजेंसी के मुताबिक, अंदर आने वाला रास्ता पूरी तरह ईरान के जलक्षेत्र से होकर गुजरता। बाहर जाने वाला रास्ता ईरान और ओमान दोनों के जलक्षेत्र से होकर जाता। इस योजना की जानकारी दूसरे खाड़ी देशों को बैठक में दी जानी थी। हालांकि, इस समझौते का मतलब यह नहीं है कि होर्मुज पूरी तरह खुल गया है। ईरान ने स्ट्रेट खोलने के लिए 7 शर्तें रखी हैं।

रविवार सुबह होर्मुज के पास एक ईरानी कमर्शियल जहाज पर हमला हुआ। ईरानी सरकारी मीडिया के मुताबिक, इसमें एक व्यक्ति की मौत हुई और चार क्रू सदस्य घायल हुए। ब्रिटेन की UKMTO ने भी कहा कि होर्मुज से गुजर रहे एक जहाज पर प्रोजेक्टाइल से हमला हुआ। इसके बाद जहाज में आग लग गई और क्रू को बाहर निकाल लिया गया। हालांकि, यह साफ नहीं है कि UKMTO ने जिस घटना की जानकारी दी, वही ईरान द्वारा बताई गई घटना थी या नहीं।

ईरान ने कहा है कि होर्मुज से गुजरने वाले जहाजों का संचालन ओमान के साथ समझौते के तहत किया जाएगा। ईरानी अधिकारियों के मुताबिक, फारस की खाड़ी में जाने वाले जहाज ईरानी जलक्षेत्र से गुजरेंगे। बाहर आने वाले जहाज ईरान और ओमान दोनों के जलक्षेत्र का इस्तेमाल करेंगे। ईरान जहाजों से रास्ता इस्तेमाल करने की फीस लेने पर भी विचार कर रहा है। लेकिन विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने कहा कि अमेरिका जब तक हमारी मांगें पूरी नहीं करता, तब तक ईरान होर्मुज नहीं खोलेगा। फिलहाल इस रास्ते से व्यापारिक जहाजों की आवाजाही बहुत कम है।

खाड़ी देशों को समझौते पर चिंता

बैठक में शामिल होने की इराक ने पुष्टि की थी। बहरीन ने ईरान से राजनयिक संबंध नहीं होने के कारण शामिल होने से इनकार किया। सऊदी अरब भी ईरान-ओमान समझौते में बदलाव चाहता है। एक खाड़ी अधिकारी के मुताबिक, रियाद को चिंता है कि इस समझौते का होर्मुज और GCC देशों पर लंबे समय तक असर पड़ सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि ईरान समझौता करना चाहता है और उसके अधिकारी लगातार फोन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि ईरान युद्ध इसी साल खत्म होगा। जब उनसे पूछा गया कि क्या अमेरिका ने ईरानी जहाज पर हमला किया, तो उन्होंने कहा, मैं यह नहीं कहना चाहता।

हसीना युग के रिश्ते थे असहज, अब भारत से चाहिए नई शुरुआत : बांग्लादेश

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की नई सरकार भारत के साथ पुराने रिश्तों को बदलकर नए सिरे से शुरू करना चाहती है। बांग्लादेश के विदेश मामलों के राज्य मंत्री हुमायूं कबीर ने कहा, "शेख हसीना के शासनकाल में भारत-बांग्लादेश के रिश्ते असहज थे। अब वे दोनों देशों के बीच आपसी फायदे पर आधारित नए रिश्ते बनाना चाहते हैं। ये काम सीधे दोनों देशों की बातचीत से होना चाहिए।" हालांकि, उन्होंने कुछ दिन पहले ही बांग्लादेश ने कहा था कि प्रधानमंत्री तारिक रहमान भारत में होने वाले ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल नहीं होंगे क्योंकि उन्हें इस कार्यक्रम के लिए "ठीक से आमंत्रित" नहीं किया गया था। भारत ने रहमान को द्विपक्षीय यात्रा और बिम्सटेक के अध्यक्ष के तौर पर ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया था। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, ढाका ने इनमें से किसी भी निमंत्रण को औपचारिक रूप से स्वीकार नहीं किया था। अगस्त 2024 में युवाओं के नेतृत्व वाले आंदोलन के बीच सत्ता से हटाए जाने के बाद शेख हसीन भारत चली आई थीं। भारत ने उन्हें नई दिल्ली में शरण देने के फैसला लिया। इस वजह से भारत और बांग्लादेश के रिश्तों में तनाव आ गया था। कबीर ने रविवार को ढाका में पत्रकारों से कहा कि बांग्लादेश भारत के साथ अपने द्विपक्षीय संबंधों को "फिर से पटरी पर लाना" चाहता है। हुमायूं कबीर, "हम एक नए रिश्ते की ओर बढ़ना चाहते हैं और ये काम आपसी बातचीत के जरिए होना चाहिए, न कि किसी मल्टीलेटरल फोरम के जरिए।" कबीर ने कहा कि बांग्लादेश को भारत के साथ अपनी "जरूरत से ज्यादा उलझन" से बाहर निकलना चाहिए और नई दिल्ली के साथ ज्यादा संतुलित तरीके से पेश आना चाहिए।

चीन ने ईरान को दी अमेरिकी एयरबेस की तस्वीरें? 3 US सैनिकों की मौत से जुड़ा लिंक

बीजिंग, एजेंसी। चीन से जुड़े संस्थानों ने ईरान को जॉर्डन में मौजूद अमेरिकी एयरफोर्स बेस की हाई-क्वालिटी सैटेलाइट तस्वीरें दी थीं। ये तस्वीरें 17 जुलाई को ईरान के मिसाइल हमले से पहले और बाद की थीं। इस हमले में 3 अमेरिकी सैनिकों की मौत हुई थी। अमेरिकी अधिकारियों ने शनिवार को कहा कि इन तस्वीरों और जॉर्डन के मुवाफ्फक सल्ती एयर बेस पर हुए हमले के बीच संबंध मिला है। द वॉल स्ट्रीट जर्नल ने अमेरिकी अधिकारियों के हवाले से यह जानकारी दी है।

अमेरिका के मुताबिक, चीन की मदद से ईरान के हमले में अमेरिकी सैनिकों की मौत हुई।हालांकि, अमेरिका ने चीन पर सीधे हमले में शामिल होने का आरोप नहीं लगाया है। इस मामले से अमेरिका और चीन के रिश्तों में तनाव और बढ़ सकता है। खासकर इसलिए क्योंकि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग की 24 सितंबर को व्हाइट हाउस में बैठक होनी है।

अमेरिकी अधिकारियों ने यह मामला चीन के अधिकारियों के सामने उठाया। चीन ने आरोप को खारिज किया और अमेरिका से सबूत मांगे। वॉशिंगटन स्थित चीनी दूतावास के प्रवक्ता ने कहा कि चीन और ईरान का सहयोग अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार है। उन्होंने आलोचकों पर दूसरे देशों को बदनाम करने का आरोप लगाया। हालांकि, उन्होंने सीधे यह जवाब नहीं दिया कि चीनी संस्थानों ने 17 जुलाई के हमले से जुड़ी तस्वीरें ईरान को दी थीं या नहीं।

सात समंदर पार पहुंची सनातन परंपरा, लंदन की टेम्स नदी पर पहली बार हुई गंगा आरती

लंदन, एजेंसी। भारत की प्रसिद्ध गंगा नदी आरती अब लंदन की टेम्स नदी तक पहुंच गई है। रविवार को लंदन में भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक परंपरा का अनोखा संगम देखने को मिला। यहां टेम्स नदी के किनारे गंगा आरती का आयोजन किया गया। यह पहला मौका था जब यहां गंगा आरती हुई। इस दौरान हिंदू समुदाय के लोगों में जबरदस्त उत्साह देखा गया। भारी संख्या में लोग आरती में शामिल हुए।

जानकारी के मुताबिक 'गंगा आरती ऑन द थेम्सः ए सेरेमनी ऑफ लाइट' का आयोजन चिन्मय मिशन यूके द्वारा वार्षिक 'टोटली थेम्स' महोत्सव के सहयोग से किया गया था, जो इस संस्था के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित वैश्विक समारोहों का एक हिस्सा था।

भारत में गंगा नदी पर होने वाली विश्व प्रसिद्ध आरती की भावना को लंदन में भी उसी भाव से और आध्यात्मिक संदेश के साथ आयोजित किया गया। लंदन में आयोजित इस कार्यक्रम को प्रकृति, ज्ञान और चेतना

के जीवनदायी प्रवाह के प्रतीक के रूप में परिकल्पित किया गया। गंगा आरती ऑन द थेम्सः ए सेरेमनी ऑफ लाइट नाम से आयोजित इस कार्यक्रम में लोगों ने नदी, प्रकृति और जीवन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए दीप जलाए। इस दौरान लोगों में काफी उत्साह था। पूरे विधि-विधान के साथ गंगा आरती की गई।

चिन्मय मिशन यूके की निवासी शिक्षिका ब्रह्मचारिणी श्रीप्रिया चैतन्य ने कहा 'पीढ़ियों से, समुदाय गंगा के किनारे एकत्रित होकर नदी, प्रकृति और जीवन को बनाए रखने वाली हर चीज के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए दीपक अर्पित करते आए हैं'। उन्होंने कहा कि टेम्स नदी पर होने वाली गंगा आरती में भी वही भावना झलकती है, जो लोगों को कृतज्ञता, आशा और एकता के साझा क्षण में एक साथ लाती है।

चिन्मय मिशन के 75 वर्ष पूरे

चैतन्य ने कहा कि चिन्मय मिशन के लिए गंगा नदी ज्ञान के प्रवाह का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा 'हमारे संस्थापक स्वामी चिन्मयानंद ने अपना जीवन हिमालय से हिंदू धर्म की महान दार्शनिक परंपराओं में से एक, वेदांत के शाश्वत ज्ञान को लोगों के रोजमर्रा के जीवन में लाने के लिए समर्पित कर दिया। चिन्मय मिशन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में, यह आयोजन उस विरासत का भी उत्सव है। ज्ञान, सेवा और कृतज्ञता का प्रवाह सीमाओं से परे है'।

मां गंगा के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति

चिन्मय मिशन के एक प्रवक्ता ने कहा कि आरती, कृतज्ञता व्यक्त करने का एक पारंपरिक हिंदू समारोह है जिसमें बड़े बहुस्तरीय तेल के दीपक जलाए जाते हैं, प्रार्थना की जाती है, संगीत गाया जाता है और मंत्रोच्चार किया जाता है। यह नदी के प्रति श्रद्धा और प्रकृति माता के प्रति व्यापक कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति श्रद्धा, गंगा आरती का महज एक अतिरिक्त विषय नहीं है। यह समारोह स्वयं मां गंगा के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति है, जिन्हें हिंदू परंपरा में पवित्र, जीवनदायी और पालनहार के रूप में सम्मानित किया जाता है।

साफ सफाई का खास ध्यान

खास बात ये है कि आरती के दौरान साफ सफाई का भी पूरा ध्यान रखा गया। टेम्स नदी के किनारे की आरती पूरी तरह से जमीन पर हुई, समारोह से संबंधित कोई भी चीज टेम्स में न तो रखी गई, न ही डाली गई और न ही छोड़ी गई। संगीत और मंत्रोच्चार के साथ आयोजित इस कार्यक्रम में ब्रिटेन भर के हिंदू संगठनों और समुदायों के वरिष्ठ आध्यात्मिक नेता और प्रतिनिधि एक साथ आए। इसका उद्देश्य ब्रिटिश हिंदू और दक्षिण एशियाई समुदाय के लिए एक व्यापक उत्सव के रूप में और सभी पृष्ठभूमि के लोगों को प्रकृति के प्रति कृतज्ञता और श्रद्धा व्यक्त करने के लिए एक साथ आने के निमंत्रण के रूप में था।

चिन्मय मिशन ने कहा कि गंगा आरती का मूल संदेश हमें यह याद दिलाता है कि हमें प्राकृतिक जगत को हल्के में नहीं लेना चाहिए।उन्होंने कहा कि प्रकृति के प्रति कृतज्ञता केवल प्रार्थना के माध्यम से ही नहीं, बल्कि अपने आसपास के पर्यावरण के प्रति देखभाल और जिम्मेदारी के भाव से भी व्यक्त की जानी चाहिए।

चिन्मय मिशन की स्थापना

चिन्मय मिशन एक वैश्विक आंदोलन है, जिसकी स्थापना 1951 में हुई थी। यह आंतरिक परिवर्तन और आध्यात्मिक जागृति के लिए समर्पित है, जो वेदांत के शाश्वत ज्ञान में निहित है और गुरुदेव स्वामी चिन्मयानंद की दृष्टि से प्रेरित है। आज, मिशन के विश्व भर में 350 से अधिक केंद्र हैं, जो आध्यात्मिक शिक्षा, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शैक्षणिक संस्थानों और सेवा पहलों के माध्यम से समुदायों का समर्थन करते हैं। यूके में, चिन्मय मिशन जीवन के हर चरण के लिए कार्यक्रम प्रदान करता है। बच्चों और किशोरों से लेकर युवा वयस्कों, परिवारों और वरिष्ठ नागरिकों तक।

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से पर्दे के पीछे मिलते हैं तेजस्वी यादव, बिहार की बाढ़ पर पीके का नया सियासी बाण

नई दिल्ली, एजेंसी। जन सुराज पार्टी चीफ और बिहार के बांकीपुर विधायक प्रशांत किशोर ने राष्ट्रीय जनता दल (RJD) नेता तेजस्वी यादव पर बड़ा सियासी हमला बोला है। उनका कहना है कि तेजस्वी यादव पर्दे के पीछे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलते हैं। उनके इस बयान से हलचल तेज हो गई है। फिलहाल तेजस्वी यादव की तरफ से इस पर कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई है।

दरअसल पत्रकारों ने प्रशांत किशोर से तेजस्वी को लेकर एक सवाल किया था। पत्रकारों ने उनसे कहा कि हाल ही में तेजस्वी ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि उन्होंने 5 हजार करोड़ रुपए की मांग को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को एक पत्र लिखा है, लेकिन अभी तक उन्हें कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला है। इसके जवाब में प्रशांत किशोर ने तेजस्वी पर निशाना साधा।

प्रशांत किशोर ने कहा कि तेजस्वी यादव बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता हैं, उन्हें प्रधानमंत्री से मिलने जाना चाहिए। किशोर ने कहा कि तेजस्वी अपनी सुरक्षा को लेकर पीएम मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से पर्दे के पीछे मिल सकते हैं उनसे बात कर सकते हैं, तो उन्हें बिहार की बेहतरी के लिए भी उनसे मिलना चाहिए।

दरअसल बिहार में बाढ़ की स्थिति को लेकर नेता प्रतिपक्ष और आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने केंद्र और बिहार सरकार पर तीखा हमला बोला था। उन्होंने आरोप लगाया कि बिहार में बाढ़ से भारी तबाही के बावजूद केंद्र सरकार की ओर से पर्याप्त मदद नहीं मिल रही है। उन्होंने कहा था कि बिहार में बाढ़ से हाहाकार मचा है। हर कोई परेशान हैं। उनके मुताबिक अब तक 50 से ज्यादा लोगों की मौत हुई है, वहीं बाढ़ से हजारों करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। उन्होंने दावा किया कि करीब 45 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। उन्होंने कहा था कि पीएम मोदी और अमित शाह की तरफ सेबाढ़ को लेकर कोई ठोस मदद की घोषणा नहीं हुई है। उन्होंने कहा था कि केंद्र सरकार से बिहार के लिए विशेष पैकेज की मांग की है। उन्होंने 5 हजार करोड़ रुपये की तत्काल सहायता देने की मांग उठाई थी। लेकिन अभी तक कोई जवाब नहीं मिला।

'उमर खालिद की छवि चमकाने में जुटा जजेएनयूएसयू ...' एबीवीपी ने लगाया आरोप, कहा- छात्र के मुद्दे भूल गए

नई दिल्ली, एजेंसी। एबीवीपी JNU की ओर से जारी बयान में कहा गया कि जेएनयूएसयू ने फ्री एक्सप्रेशन के नाम पर Prisoner No.626710 is Present डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग आयोजित की है। एबीवीपीने आरोप लगाया कि डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग के जरिए उमर खालिद के प्रति सहानुभूति पैदा करने और उनकी छवि को बेहतर दिखाने की कोशिश की जा रही है। एबीवीपी ने जेएनयूएसयू पर छात्र हितों से जुड़े मुद्दों, जैसे हॉस्टल आवंटन, पढ़ने की जगह और जर्जर इंफ्रास्ट्रक्चर की समस्याओं की अनदेखी करने का आरोप लगाया।

बयान में JNU प्रशासन पर भी सवाल उठाए गए हैं और आरोप लगाया गया कि प्रशासन की अनुमति और समर्थन के बिना इस तरह की गतिविधियां संभव नहीं हैं। एबीवीपी ने सवाल उठाया कि विश्वविद्यालय प्रशासन डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की अनुमति किस नियम के तहत दे रहा है।

एबीवीपी ने कहा कि जेएनयू एक सरकारी और प्रतिष्ठित यूनिवर्सिटी है जो जनता के टैक्स के पैसे से चलती है। इसके बावजूद, वहां का छात्र संघ 'फ्रीडम ऑफ स्पीच' का बहाना बनाकर दिल्ली दंगों के आरोपी उमर खालिद पर बनी एक फिल्म दिखा रहा है। छात्र संघ देश के पैसे से बनी जगह का इस्तेमाल करके एक आरोपी की छवि को सुधारने का काम कर रहा है।

क्या लगाया AVBP ने आरोप?

ABVP ने आरोप लगाया कि राष्ट्रवादी छात्रों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई और पाबंदियां लगाई जाती हैं, जबकि अलगाववादी विचार रखने वाले लोगों को विश्वविद्यालय के संसाधनों का इस्तेमाल करने दिया जाता है। ABVP ने JNU में Left-Admin Nexus खत्म करने, अकादमिक परिसर के राजनीतिकरण को रोकने और अकादमिक गरिमा बहाल करने की मांग की।

नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी (NLSIU) में जेल में बंद एक्टिविस्ट उमर खालिद पर बनी डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग सोमवार 14 सितंबर को शाम 7 बजे होनी थी। लेकिन लॉजिस्टिकल और सुरक्षा कारणों से इसे टाल दिया गया है। एबीवीपी के विरोध के बावजूद आयोजकों ने कहा है कि वे किसी दबाव में नहीं आए हैं। ये स्क्रीनिंग लॉ एंड सोसाइटी कमिटी ने उमर खालिद के साथ एकजुटता दिखाने के लिए रखी थी।

हॉरर थ्रिलर फ़िल्म 418 का ट्रेलर रिलीज़, रहस्यमयी कमरे की कहानी बढ़ाएगी डर, 18 सितंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी

मैत्री मूवी मेकर्स की आगामी डरावनी रोमांचक फिल्म '418Ó 18 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। प्रशांत नील की प्रस्तुति और नवीन यरनेनी तथा यलमनचिली रवि शंकर द्वारा निर्मित इस फिल्म से कीर्तन नडागौडा बतौर निर्देशक अपनी शुरुआत कर रहे हैं। फिल्म की डरावनी प्रचार सामग्री और हाल ही में जारी हुए प्रचार-चित्र ने दर्शकों के बीच उत्सुकता बढ़ा दी है।

फिल्म के प्रचार-चित्र में एक सुनसान इमारत और उसके भीतर मौजूद रहस्यमयी कमरा नंबर 418 को दिखाया गया है, जो अलौकिक रहस्य का केंद्र बना हुआ है। लंबे समय से बंद पड़ी इस इमारत के दोबारा खुलने के बाद 18 वर्षीय विवेक की जिंदगी में अजीब घटनाएं घटने लगती हैं। वह धीरे-धीरे वास्तविकता और परेशान करने वाले भ्रम के बीच उलझ जाता है।

कहानी में गर्भवती महिला देविका के आने के बाद रहस्य और गहरा जाता है। वहीं, इमारत से जुड़े 15 साल पुराने काले इतिहास के सामने आने से घटनाओं में रोमांच और भय लगातार बढ़ता जाता है।

निर्देशक कीर्तन नडागौडा ने पारंपरिक डरावनी फिल्मों में दिखाई जाने वाली घिसी-पिटी डराने वाली तकनीकों के बजाय वातावरण, मनोवैज्ञानिक तनाव और स्वाभाविक भय पर अधिक ध्यान दिया है। प्रचार-चित्र में सुनसान इमारत और उसके आसपास की रहस्यमयी घटनाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जिससे कहानी को लेकर जिज्ञासा बढ़ती है।

फिल्म की छायांकन की जिम्मेदारी दिनेश दिवाकर ने संभाली है। उनकी कैमरा तकनीक डरावने स्थानों और घटनाओं को अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है। वहीं, वेंकी जीजी के पार्श्व संगीत और ध्वनि संयोजन से फिल्म में खतरे तथा भय का माहौल और अधिक प्रभावशाली बनता दिखाई देता है।

फिल्म की अभिनेत्री चैत्रा अचार प्रचार-चित्र में अपनी डरावनी और प्रभावशाली प्रस्तुति के कारण खास तौर पर ध्यान आकर्षित करती हैं। उनके अभिनय से कई दृश्य बेहद भयावह और बेचैन करने वाले नजर आते हैं। सूर्या राज, चरण लक्काराजू और प्रीति पगडाला ने भी अपने अभिनय से फिल्म में प्रभाव छोड़ा है।

'418' की कहानी रहस्य, अलौकिक घटनाओं, मनोवैज्ञानिक तनाव और बढ़ते भय के इर्द-गिर्द बुनी गई है। फिल्म के प्रचार से संकेत मिलता है कि निर्माताओं ने केवल डराने के बजाय दर्शकों को कहानी के रहस्य से लगातार जोड़े रखने पर भी विशेष ध्यान दिया है।

सुनसान इमारत, रहस्यमयी कमरा, 15 साल पुराना काला इतिहास और वास्तविकता तथा भ्रम के बीच उलझता मुख्य किरदार फिल्म के प्रति उत्सुकता बढ़ा रहे हैं। अब 18 सितंबर 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के बाद यह देखना दिलचस्प होगा कि '418' डरावनी फिल्मों के शौकीन दर्शकों को कितना प्रभावित कर पाती है।

एक्ट्रेस ने हटाए गौरव खन्ना के फोटोज, सोशल मीडिया पर किया अनफॉलो, एलिमनी पर दिया जवाब

आकांक्षा चामोला और गौरव खन्ना के रिश्तों का तनाव खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है। अब अभिनेत्री ने गौरव को सोशल मीडिया पर अनफॉलो भी कर दिया है।

आकांक्षा चामोला और गौरव खन्ना के रिलेशनशिप में काफी मुश्किलें चल रही हैं। इसी बीच आकांक्षा ने पति गौरव को सोशल मीडिया पर अनफॉलो कर दिया है। इसके साथ ही उन्होंने एक्टर से जुड़ी सभी तस्वीरें और रील भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट से डिलीट कर दी हैं।

अब तक आकांक्षा और गौरव सोशल मीडिया पर एक आदर्श कपल की तरह दिखाई देते थे। मगर 'लॉकअप 2' में आकांक्षा ने कहा था कि वह और गौरव अब अलग हो रहे हैं। इसके बाद से ही फैंस के बीच दोनों का रिश्ता चर्चा का विषय बना हुई था। मगर अब रिपोर्ट्स के मुताबिक आकांक्षा ने गौरव को इंस्टाग्राम से अनफॉलो कर दिया है। इतना ही नहीं अब उन्होंने एक्टर की फोटोज और रील्स भी अपने अकाउंट से हटा दिया।

पिछले कुछ समय से सोशल मीडिया पर यह खबरें भी चल रही हैं कि आकांक्षा ने गौरव से तलाक के बदले 10 करोड़ रुपये की एलिमनी की मांग की है। मगर हाल ही में मैशेबल इंडिया को दिये एक इंटरव्यू में आकांक्षा ने कहा, 'अगर मैंने गौरव से 10 करोड़ मांगे होते और मुझे वो मिल गए होते तो मैं यहां बैठी होती? सच में मेरे पास इतने पैसे होते ना तो मैं कब का ये देश छोड़ कर चली गई होती।'

आकांक्षा और गौरव की शादी साल 2016 में हुई थी। फिलहाल दोनों पिछले एक साल से अलग रह रहे हैं। तलाक की वजह बताते हुए आकांक्षा ने कहा था कि दोनों के बीच भविष्य और परिवार नियोजन को लेकर अलग विचार थे। जहां गौरव पिता बनना चाहते थे, जबकि आकांक्षा बच्चे नहीं चाहती थीं। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि केवल यही एक कारण नहीं है और दोनों ने काफी सोच-विचार के बाद यह निर्णय लिया है। आकांक्षा ने यह भी कहा कि उनके और गौरव के बीच किसी तरह की कोई कड़वाहट नहीं है।

राहुल विजय की 'एएच का रहस्यमयी टीजर जारी, गुमशुदगी की जांच में खुलेंगे खौफनाक राज

अभिनेता राहुल विजय की आगामी तेलुगु रोमांचक फिल्म 'एएच का दिलचस्प टीजर जारी कर दिया गया है। टीजर सामने आते ही फिल्म को लेकर दर्शकों की उत्सुकता बढ़ गई है। रहस्य, अपराध और डरावने दृश्यों से भरपूर यह झलक शुरुआत से ही एक बेचैन कर देने वाला माहौल तैयार करती है और आगे बढ़ने के साथ कहानी को लेकर कई सवाल खड़े करती है।

टीजर की शुरुआत कुछ परेशान करने वाले दृश्यों से होती है। इसके बाद एक जांच के इर्द-गिर्द कहानी का तनाव धीरे-धीरे बढ़ता दिखाई देता है। खून के निशान, अंधेरी रातें, परछाइयां, सुनसान स्थान और गंभीर भाव-भंगिमा वाले किरदार फिल्म की रहस्यमयी दुनिया की झलक देते हैं। हालांकि टीजर में कहानी की महत्वपूर्ण घटनाओं और संभावित मोड़ों को उजागर नहीं किया गया है।

टीजर में राहुल विजय को बेहद गंभीर और प्रभावशाली अंदाज में पेश किया गया है। उनकी भूमिका किसी परेशान करने वाले मामले में उलझी हुई नजर आती है। कई दृश्यों में उनका सामना ऐसे हालात से होता दिखता है, जिनमें अपराध और रहस्य की परतें जुड़ी हुई हैं।

खून से जुड़े दृश्य, रात का भयावह वातावरण और किरदारों के बीच आमने-सामने के टकराव कहानी में बढ़ते तनाव का संकेत देते हैं। टीजर का संपादन भी इस तरह किया गया है कि दर्शकों की जिज्ञासा बनी रहे और कहानी के चौंकाने वाले रहस्यों का खुलासा न हो।

फिल्म के शीर्षक 'एएच ने पहले ही दर्शकों का ध्यान खींचा है। शीर्षक को 'अम्मयी यानी लड़की, 'अदृश्यम यानी गायब होना और 'अन्वेषण यानी जांच जैसे शब्दों से जोड़कर देखा जा रहा है। इससे संकेत मिलता है कि कहानी एक लड़की के लापता होने और उसके पीछे छिपे रहस्य की जांच के इर्द-गिर्द घूम सकती है।

हालांकि टीजर कहानी के बारे में बहुत ज्यादा जानकारी नहीं देता, लेकिन इसमें संदेह, अपराध और अमानवीयता के गहरे संकेत नजर आते हैं। इससे यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि फिल्म सामान्य गुमशुदगी की कहानी से आगे बढ़कर किसी गंभीर और पेचीदा रहस्य को सामने ला सकती है।

साई बाली के निर्देशन में बनी 'एएच में राहुल विजय और अर्चना अय्यर प्रमुख भूमिकाओं में हैं। इनके अलावा जॉन विजय, सुदर्शन, मिर्ची किरण, बिथिरी साथी और दयानंद रेड्डी भी महत्वपूर्ण किरदारों में नजर आएंगे।

फिल्म का संगीत श्री चरण पकाला ने तैयार किया है, जबकि छायांकन की जिम्मेदारी मोनीश भूपति राजू ने संभाली है। फिल्म का निर्माण कनका राव तोनांगी, अभिषेक और गैरी बीएच ने किया है।

'एएच के टीजर को देखकर साफ है कि फिल्म में रहस्य और अपराध के साथ भय का वातावरण भी प्रमुख भूमिका निभाएगा। निर्माताओं ने कहानी के महत्वपूर्ण हिस्सों को फिलहाल पर्दे के पीछे रखा है, जिससे फिल्म को लेकर उत्सुकता और बढ़ गई है।

राहुल विजय का गंभीर अभिनय, अंधेरा और रहस्यमयी वातावरण तथा गुमशुदगी की जांच से जुड़े संकेत फिल्म को एक अलग तरह की रोमांचक प्रस्तुति का रूप देते हैं। अब दर्शकों की नजर फिल्म की अगली झलक और प्रदर्शन तिथि पर है।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com